04 - शिव के प्रतीकः सनातन से विज्ञान तक, शक्ति और संतुलन

05 - महाकाल देवता ही नहीं वैज्ञानिक तथ्य भी है !

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 15 फरवरी, 2026

06 -गांवों - शहरों के चहुंमुखी विकास और जन - जन की समृद्धि के लिए काम..

07 - विदाई नहीं, यह नए सुरों का उद्गम

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 165, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

महाशिवरात्रि

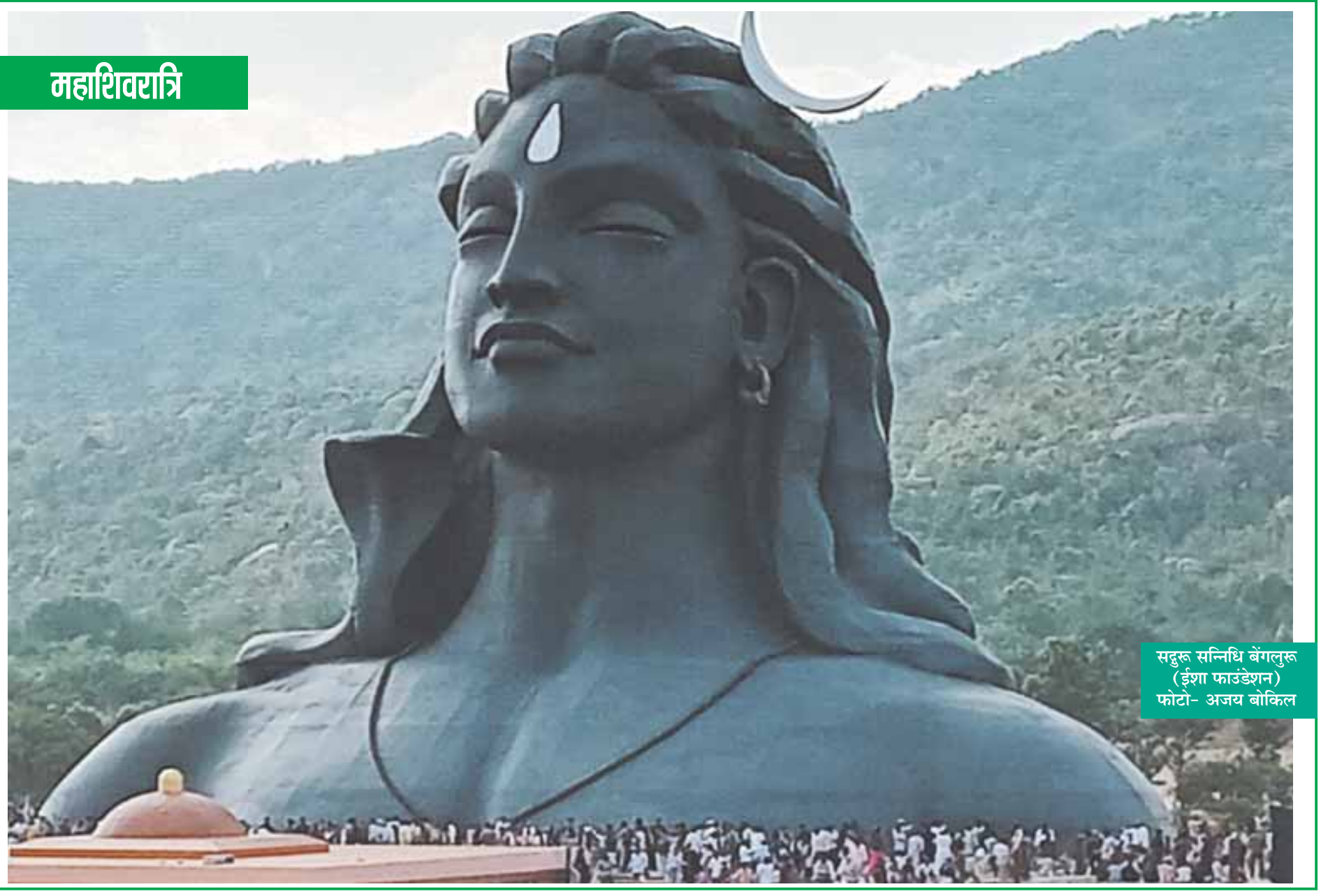

सद्गुरू सन्निधि बेंगलुरू (ईशा फाउंडेशन) फोटो- अजय बोकिल

मोदी कैबिनेट ने 'अर्बन चैलेंज फंड' को दी मंजूरी

अब 'स्मार्ट' ही नहीं 'अमीर' भी बनेंगे भारतीय शहर

नईदिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय कैबिनेट ने शनिवार को भारतीय शहरों की सूरत बदलने के लिए 'अर्बन चैलेंज फंड' (यूसीएफ) को मंजूरी दे दी है। इस योजना के तहत केंद्र सरकार अगले पांच वर्षों में 1 लाख करोड़ की सहायता राशि प्रदान करेगी। सरकार का लक्ष्य इस फंड के जरिए 2031 तक शहरी बुनियादी ढांचे में कुल 4 लाख करोड़ का निवेश जुटाना है।

फंडिंग का बदला अंदाज- यह योजना भारत के शहरी विकास में एक बड़े बदलाव का संकेत है। अब शहर केवल सरकारी ग्रांट्स पर निर्भर नहीं रहेंगे। केंद्र सरकार किसी भी प्रोजेक्ट की लागत का केवल 25 प्रतिशत हिस्सा देगी। शहरों को प्रोजेक्ट शुरू करने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत रकम बाजार (बैंक लोन, म्युनिसिपल बॉन्ड या प्राइवेट निवेश) से जुटानी होगी। शेष 25 प्रतिशत हिस्सा राज्य सरकार या नगर निगम को वहन करना होगा।

शहरों के बीच होगी 'टक्कर'- फंड के लिए शहरों का चयन 'चैलेंज मोड' के जरिए होगा। इसका मतलब है कि जिन शहरों के प्रोजेक्ट प्रस्ताव सबसे प्रभावी, सुधारवादी और परिणामोन्मुखी होंगे, उन्हें ही फंडिंग मिलेगी। यह फंड 2030-31 तक चालू रहेगा और भविष्य में इसे 2034 तक बढ़ाया जा सकता है।

पहाड़ी और उत्तर-पूर्वी राज्यों के लिए विशेष कवच

छोटे शहरों और पहाड़ी राज्यों की मदद के लिए सरकार ने 5,000 करोड़ का एक विशेष कॉर्पस बनाया है। यह उन नगर निकायों के लिए 'क्रेडिट गारंटी' का काम करेगा जो पहली बार बाजार से कर्ज ले रहे हैं। इसका उद्देश्य इन निकायों को इतना मजबूत बनाना है कि वे खुद निवेश जुटाने में सक्षम हो सकें।

किन कामों पर होगा खर्च?

- इस फंड का मुख्य फोकस तीन प्रमुख क्षेत्रों पर रहेगा
- शहरों को आर्थिक विकास का हब बनाना।
- पुराने शहरी केंद्रों और हेरिटेज साइट्स का पुनर्विकास।
- जल आपूर्ति और स्वच्छता प्रणालियों में सुधार (जैसे सीवेज नेटवर्क, कचरा प्रबंधन और बेहतर परिवहन)

मोदी वायुसेना के एयर क्राफ्ट से असम के हाई-वे पर उतरे

ऐसा करने वाले पहले पीएम

- ब्रह्मपुत्र पर 6-लेन पुल की सौगात देकर असम में बोले पीएम मोदी, नॉर्थ ईस्ट हमारे लिए अष्टलक्ष्मी

देश का बुरा सोचने वाले को कांग्रेस कंधे पर बैठाती है

गुवाहाटी (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को ब्रह्मपुत्र नदी पर बने कुमार भास्कर वर्मन सेतु और आईआईएम गुवाहाटी के

टेंपरेरी कैंपस का उद्घाटन किया। पीएम पहले चाबुआ एयरफील्ड पहुंचे थे। इसके बाद वे वायुसेना के सी-130 एयरक्राफ्ट से डिब्रूगढ़ पहुंचे। प्लेन ने यहां मोरन बाईपास पर इमरजेंसी लैंडिंग फैसिलिटी (ईएलएफ) पर लैंडिंग की। मोदी ऐसा करने वाले पहले प्रधानमंत्री बने।

पीएम मोदी ने शनिवार को गुवाहाटी में ब्रह्मपुत्र नदी पर बने भास्कर वर्मा सेतु और आईआईएम गुवाहाटी के टेंपरेरी कैंपस का उद्घाटन किया। पीएम मोदी ने कहा- बजट के बाद असम का नार्थ ईस्ट का मेरा ये पहला दौरा है, जिस नॉर्थ ईस्ट को कांग्रेस ने हमेशा नजर अंदाज किया उसकी हम सेवा कर रहे हैं। उन्होंने कहा- नॉर्थ ईस्ट हमारे लिए अष्टलक्ष्मी है। बजट में ज्यादा फोकस नार्थ ईस्ट को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने पर है।कांग्रेस के समय असम को पाई-पाई के लिए तरसाया जाता था। तब टैक्स के हिस्से के रूप में सिर्फ 10 हजार करोड़ रुपए मिलते थे। देश को बुरा सोचने वाले को कांग्रेस कंधे पर बैठाती है।

सीएम यादव ने पंधाना में आयोजित कार्यक्रम में 'लाड़ली बहनों' के खाते में जारी की 33वीं किश्त

608 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन भी किया

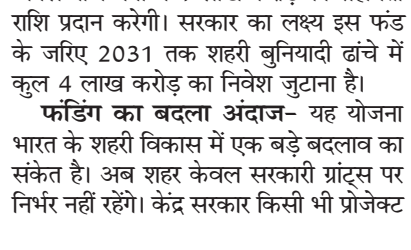

खंडवा (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शनिवार को खंडवा जिले की पंधाना विधानसभा में आयोजित कार्यक्रम में सिंगल क्लिक के जरिए 'लाड़ली बहना योजना' की 33वीं किस्त जारी की। उन्होंने प्रदेश की 1.25 करोड़ महिलाओं के खातों में कुल 1836 करोड़ रुपए ट्रांसफर किए। इसके साथ ही सीएम ने 608 करोड़ रुपए के विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमिपूजन भी किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के खंडवा के पंधाना में 'लाडली बहना सम्मेलन' और 'विकास कार्यों के भूमि-पूजन और लोकार्पण समारोह' में आगमन पर क्षेत्रवासियों ने पारंपरिक रूप से स्वागत-अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए कहा, कांग्रेसियों, तुम्हारे कर्म ऐसे हैं कि 20 साल से घर बैठे हो और 20 साल और घर बैठोगे। उन्होंने योजना की राशि को लेकर टिप्पणी करने वालों को भी आड़े हाथों लिया। सीएम ने कहा कि जो लोग कहते हैं कि पैसा गलत कामों में चला जाता है, उन्हें शर्म आनी चाहिए। बहनों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, लोकतंत्र में बदला लेने का सबसे अच्छा दिन मतदान का होता है। बदला लेना है तो वोट से लेना।

मुख्यमंत्री ने बताया कि अब तक लाड़ली बहनों के खातों में 50 हजार करोड़ रुपए से अधिक राशि भेजी जा चुकी है। पहले 1000 रुपए, फिर 1250 रुपए और अब 1500 रुपए प्रतिमाह दिए जा रहे हैं।

608 करोड़ के विकास कार्यों की सौगात- सभा में पंधाना विधानसभा के लिए 608 करोड़ रुपए के विकास कार्यों की घोषणा और लोकार्पण किया गया। इनमें प्रमुख रूप से शामिल हैं

301.41 करोड़ रुपए की भाम सिंचाई परियोजना। 37 करोड़ रुपए का सांदीपनि विद्यालय। 11.06 करोड़ रुपए का संयुक्त एसडीएम कार्यालय। 2.90 करोड़ रुपए का बस स्टैंड, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और रैन बसेरा। इसके अलावा विधायक छाया मोरे की मांग पर सुक्ता माइक्रो उद्वहन परियोजना और प्याज प्रोसेसिंग यूनिट सहित अन्य घोषणाएं भी की गईं।

निमाड़ को बनाएंगे सिंचाई में नंबर-1- मुख्यमंत्री ने दावा किया कि निमाड़ क्षेत्र सिंचाई के मामले में पंजाब-हरियाणा को पीछे छोड़ देगा। यहां सड़क और रेल नेटवर्क मजबूत होगा, उद्योग स्थापित होंगे और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

पाक कप्तान बोले-हैंडशेक न करने का जवाब आज मैच में देंगे

कोलंबो (एजेंसी)। पाकिस्तान के कप्तान सलमान अली आगा ने टी-20 वर्ल्ड कप में भारत और पाकिस्तान के मुकाबले से पहले शनिवार को कोलंबो में प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इस दौरान आगा ने हैंडशेक विवाद पर कहा- इसका जवाब हम आज मैदान पर देंगे। पिछले साल हुए एशिया कप 2025 में भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव समेत सभी प्लेयर्स ने पाकिस्तानी खिलाड़ियों से हाथ नहीं मिलाया था। सूर्यकुमार ने कहा था कि उनकी टीम पाकिस्तान से हाथ नहीं मिलाएगी। यह फैसला पहलगाम आतंकी हमले में मारे गए भारतीय नागरिकों के सम्मान में लिया गया था।इसे ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय सेना के समर्थन के तौर पर भी देखा गया था। दोनों टीमों के बीच हाई-वोल्टेज मुकाबला आज रविवार को कोलंबो में खेला जाएगा।

इतिहास नहीं बदल सकते

आगा ने माना कि वर्ल्ड कप में पाकिस्तान का रिकॉर्ड भारत के खिलाफ अच्छा नहीं रहा है। उन्होंने कहा, इतिहास नहीं बदल सकते। रिकॉर्ड अच्छा नहीं है, लेकिन इस बार बेहतर प्रदर्शन की कोशिश करेंगे।

सुप्रभात

जाने कब खाली हो जाये
कमरा यार किराये का।
छूटे, बिना पलक झपकाये
कमरा यार किराये का।
दिन दिन उखड़ रहा रंग रोगन,
दीवारों में उतरी सीलन।
दरक गये खिड़की दरवाजे
खुदा पड़ा है सारा आँगन।
ईंट ईंट कर ढहता जाये
कमरा यार किराये का ।।
फूल न हों तो उपवन कैसा ?
मेघ न हों तो सावन कैसा ?
प्राणों के बिन धड़कन कैसी,
जीव न हो तो जीवन कैसा ?
जीवन का दर्शन समझाये
कमरा यार किराये का ।।
कहते हैं सब दुनिया फानी
चार दिनों की बोली बानी।
प्राण पखेरू कब उड़ जाये
उजड़े साँसों की रजधानी।
एक छिने तो दूजा पाये
कमरा यार किराये का ।।
जितने दिन की मिली उधारी
उतने दिन की दुनियादारी।
जिस दिन खत्म मियाद हो गयी
समझो खत्म किरायेदारी।
घर मालिक खाली करवाये
कमरा यार किराये का ।।
जितने दिन का है समझौता
उतने दिन का काठ कठौता।
चूल्हा चौका बर्तन भांडे।
बेटा बेटी नाती पोता।
एक रोज़ सब से बिछड़ाये
कमरा यार किराये का ।।
जब तक घर मालिक है राजी
तब तक आटा सब्जी भाजी।
जिस दिन उसकी नज़रें बदलें
कैसा पंडित कैसा काजी ?
ज्ञान ध्यान सब व्यर्थ बनाये
कमरा यार किराये का ।।
जिसने भाड़ा सही चुकाया
वह इस झंझट से बच पाया।
उसने फिर आजाद नगर में
अपना सुन्दर महल बनाया।
नहीं कभी वह फिर अपनाये
कमरा यार किराये का ।।

- डॉ. राम वल्लभ आचार्य

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c | न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 15 फरवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

युद्ध की कगार पर मिडल ईस्ट !

ट्रंप ने ईरान की ओर बढ़ाए युद्धपोत, तेहरान बोला-पूरी ताकत से देंगे जवाब

यूएस (एजेंसी)। अमेरिका ने मध्य-पूर्व में अपनी सैन्य मौजूदगी को अभूतपूर्व स्तर तक बढ़ाने का फैसला किया है। राष्ट्रपति ट्रंप के निर्देश पर दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे आधुनिक विमानवाहक पोत यूएसएस गेराइल्ड आर.फोर्ड को मध्य-पूर्व की ओर रवाना किया गया है। यह युद्धपोत पहले से क्षेत्र में तैनात यूएसएस अब्राहिम लिंकन को सपोर्ट करेगा, जिससे पर्सियन गल्फ और आसपास के इलाकों में अमेरिकी सैन्य ताकत कई गुना बढ़ जाएगी।

ईरान को सीधी चेतावनी

यह तैनाती ऐसे समय हुई है जब राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरान को कड़े शब्दों में चेतावनी दी थी कि अगर परमाणु समझौते को लेकर अमेरिका के साथ कोई डील नहीं होती, तो तेहरान के लिए हालात 'बहुत दर्दनाक' साबित हो सकते हैं। ट्रंप प्रशासन का मानना है कि सैन्य दबाव के जरिए ईरान को बातचीत की मेज पर गंभीरता से लाया जा सकता है। पिछले सप्ताह ओमान में अमेरिका और ईरान के बीच अप्रत्यक्ष बातचीत हुई थी, लेकिन कतर और ओमान की मध्यस्थता के बावजूद कोई ठोस नतीजा नहीं निकल पाया। इसके बाद ही अमेरिका ने यह बड़ा सैन्य कदम उठाया।

हिमाचल में बड़ा सड़क हादसा

कार खाई में गिरने से चार की मौत, एक घायल

देहरादून (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले के भावानगर उपमंडल में बड़ा सड़क हादसा हुआ है। हादसे में चार लोगों की मौत हो गई और एक घायल है। घायल का छोल्टू अस्पताल में उपचार चल रहा है। हादसे के कारणों का पता नहीं चल पाया है। जानकारी के अनुसार शनिवार सुबह करीब 7:00 बजे जानी संपर्क मार्ग पर हादसा हुआ। टापरी से जानी जा रही कार अचानक जानी संपर्क मार्ग पर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। हादसे के समय गाड़ी में पांच लोग सवार थे, जिनमें से चार की मौके पर ही मौत हो गई। एक को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया है।

वहीं सीएम सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने किन्नौर के भावानगर के समीप जानी लिंक रोड पर एक कार हादसे में चार लोगों के निधन पर शोक जताया है।

कार की ट्रक से भीषण टक्कर, चार जवानों की हुई मौत, एक गंभीर रूप से घायल

धमतरी (एजेंसी)। धमतरी जिले के नेशनल हाईवे-30 पर खपरी के पास एक बड़ा सड़क हादसा हुआ है। इस हादसे में चार जवानों की मौत हो गई है। वहीं, एक जवान गंभीर रूप से घायल हो गया है। बताया गया कि मृतक और घायल जवान 201 कोबरा बटालियन के हैं। वहीं, सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को बाहर निकाल इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया।

मप्र दमोह में दर्दनाक हादसा

क्षतिग्रस्त पुल से बाइक गिरने पर तीन की मौत, शादी में जा रहे थे

भोपाल/दमोह (एजेंसी)। मप्र के दमोह जिले में एक क्षतिग्रस्त पुल से मोटरसाइकिल गिरकर नदी में समा जाने से तीन युवकों की मौत हो गई। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों के अनुसार, मृतक सभी लगभग 20-22 वर्ष के थे और अपने एक मित्र की शादी में शामिल होने जा रहे थे। यह हादसा शुक्रवार रात करीब 11 बजे तेंदूखेड़ा ब्लॉक मुख्यालय से लगभग 25 किलोमीटर दूर सागर रोड पर हुआ। उप पुलिस अधीक्षक (एसडीओपी) अर्चना अहिर ने बताया कि तीनों युवक रास्ता भटक गए थे और पुल के उस हिस्से तक पहुंच गए, जो पिछले वर्ष आई बाढ़ में आंशिक रूप से बह गया था। बाइक सवार ने वाहन से नियंत्रण खो दिया, जिसके बाद मोटरसाइकिल ब्यारमा नदी में जा गिरी।

मेड़ता में सेना का ट्रक पलटा, 4 जवान घायल, दो की हालत गंभीर

मेड़ता (एजेंसी)। नागौर जिले के मेड़ता में सेना का ट्रक पलटने से दो जवान घायल हो गए, जिन्हें मेड़ता के उप जिला अस्पताल पहुंचाया गया जहां प्राथमिक इलाज के बाद डॉक्टर्स ने अजमेर रेफर कर दिया। यह हादसा शनिवार दोपहर 2 बजे करीब नेशनल हाइवे 58 स्थित डांगावास-मेड़ता बॉर्डर पर हुआ है। सेना का ये ट्रक बीकानेर से जबलपुर जा रहा था, जिसमें 4 जवान सवार थे। हादसे की खबर मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंच गई।

महाशिवरात्रि पर्व आज

मंदिरों में उमड़ेगा श्रद्धालुओं का सैलाब

उज्जैन (एजेंसी)। महाशिवरात्रि हिंदू धर्म का अत्यंत पवित्र पर्व है, जिसे भगवान शिव की आराधना और रात्रि जागरण के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। वर्ष 2026 में महाशिवरात्रि के दिन लगभग 12 घंटे तक भद्रा का प्रभाव रहने की संभावना है, जिसके कारण श्रद्धालुओं के मन में यह प्रश्न उठ रहा है कि शिव पूजा किस समय करना शुभ रहेगा।

सुबह के मुहूर्त

चर	सुबह 8.24	सुबह 9.48
लाभ	सुबह 9.48	सुबह 11.11
अमृत	सुबह 11.11	दोपहर 12.35

शाम का मुहूर्त

शुभ	शाम 6.11	रात 7.47
अमृत	शाम 7.47	रात 9.23
चर	रात 9.23	रात 10.59

इमाम बोले-जहां वंदे मातरम् अनिवार्य, वहां से बच्चों को निकालें

- उज्जैन में कहा- यह हमारी धार्मिक आजादी पर हमला; फैसला वापस ले सरकार

उज्जैन (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने 28 जनवरी को राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' को लेकर नए दिशानिर्देश जारी किए हैं। इनके मुताबिक, अब सरकारी कार्यक्रमों, स्कूलों या अन्य औपचारिक आयोजनों में 'वंदे मातरम्' बजाया जाएगा। इस दौरान हर व्यक्ति का खड़ा होना अनिवार्य होगा।

मप्र उज्जैन के इमाम मुफ्ती सैय्यद नासिर अली नदवी ने इस आदेश को इस्लाम विरोधी बताया है। उन्होंने कहा- यह आदेश हमारी धार्मिक आजादी पर हमला है। वंदे मातरम् में कहा गया है कि हिंदुस्तान की भूमि की हम पूजा करते हैं, लेकिन मुसलमान के लिए यह बिल्कुल भी सही नहीं है कि वह अल्लाह के साथ किसी और को शरीक कर अपनी पूजा में शामिल करे।

हम कहेंगे कि जिन स्कूलों में वंदे मातरम् को अनिवार्य किया जा रहा है, वहां से सभी मुसलमान अपने बच्चों को निकाल लें। हम इसकी इजाजत नहीं दे सकते कि वह इस्लाम में रहकर किसी और खुदा की इबादत करे। यह फैसला कानून के खिलाफ है। मेरी सरकार से गुजारिश है कि अपना फैसला वापस ले।

केंद्र सरकार की बड़ी सौगात

दिल्ली-हरियाणा समेत 4 राज्यों में बिछेगा 389 किमी का नया रेल नेटवर्क

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में आर्थिक मामलों की कैबिनेट कमेटी (सीसीईए) ने रेल मंत्रालय के तीन प्रोजेक्ट्स को मंजूरी दी है, जिनकी लागत लगभग 18,509 करोड़ रुपये है। इन प्रोजेक्ट्स में कसारा-मनमाड, दिल्ली-अंबाला और बल्लारी-होसपेटे के बीच तीसरी और चौथी लाइन बनाना शामिल है।

केंद्र सरकार ने दिल्ली, हरियाणा, महाराष्ट्र और कर्नाटक के 12 जिलों को कवर करने वाली तीन मल्टी-ट्रैकिंग परियोजनाओं को मंजूरी दी है। जिनकी कुल लागत 18,509 करोड़ रुपये है। इससे भारतीय रेलवे के मौजूदा नेटवर्क में लगभग 389 किलोमीटर की वृद्धि होगी।

एआई के बढ़ते प्रभाव पर माइक्रोसॉफ्ट की चेतावनी

- सीईओ सुलेमान बोले- ज्यादातर वाइट कॉलर जॉब डेढ़ साल में ऑटोमेट हो जाएंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। एआई के बढ़ते प्रभाव और छंटनी के बीच माइक्रोसॉफ्ट (एमएस) एआई के सीईओ मुस्तफा सुलेमान ने बड़ी चेतावनी दी है। उनके मुताबिक, 12-18 महीनों में एआई दफ्तरों की ज्यादातर वाइट कॉलर नौकरियों की जगह ले लेगी। असर सिर्फ सॉफ्टवेयर इंजीनियरों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वकील, अकाउंटेंट, प्रोजेक्ट मैनेजर और मार्केटिंग प्रोफेशनल्स भी इसकी जद में आएंगे।

सुलेमान ने कहा कि कम्प्यूटर पर किए जाने वाले लगभग सभी काम डेढ़ साल में ऑटोमेटेड हो जाएंगे। 2-3 साल में एआई एजेंट बड़े संस्थानों के कामकाज को बेहतर तरीके से संभालेंगे। ये टूल्स समय के साथ खुद को अपडेट करेंगे और स्वतंत्र फैसले लेंगे। सुलेमान के अनुसार भविष्य में एआई मॉडल बनाना ब्लॉग लिखने जितना आसान होगा। दूसरी तरफ, भारत सरकार इस पर अलग राय रखती है। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल का दावा है कि एआई नौकरियां नहीं छीनेगा, बल्कि युवाओं के लिए नए मौके पैदा करेगा।

- **एआई में आत्मनिर्भर होने जा रही माइक्रोसॉफ्ट-** माइक्रोसॉफ्ट अब ओपन एआई पर निर्भरता कम कर खुद के शक्तिशाली फाउंडेशन मॉडल बना रही है। इसके लिए दुनिया की बेहतरीन ट्रेनिंग टीम तैनात की गई है। कंपनी विशाल डेटा सेट को व्यवस्थित करने पर भारी निवेश कर रही है।

उत्तरप्रदेश में एक करोड़ महिलाओं की पेंशन बढ़ेगी

- सीएम योगी बोले- जो वंदे मातरम नहीं गाए, उसे कान पकड़कर बाहर करो

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी विधानमंडल में बजट सत्र का आज 5वां दिन है। राज्यपाल के अभिभाषण पर बोलते हुए सीएम योगी ने बड़ा ऐलान किया। उन्होंने कहा- हम 1.06 करोड़ निराश्रित महिलाओं को पेंशन दे रहे हैं। अभी उन्हें 12 हजार सलाना मिलता है। जल्द ही हम इसे बढ़ाने वाले हैं। परसों (15 फरवरी) इसका ऐलान वित्त मंत्री सुरेश खन्ना कर देंगे। इससे पहले सीएम ने वंदे मातरम का जिक्र किया। कहा- सपा और कांग्रेस के सांसदों ने वंदे मातरम का विरोधा किया। लेकिन वंदे मातरम का अपमान कोई नहीं कर सकता। ये हिंदुस्तान की खाएंगे, लेकिन वंदे मातरम नहीं गाएंगे। ऐसे लोगों को कान पकड़कर बाहर करना चाहिए।

भारत-यूएस ट्रेड डील पर अमित शाह की विपक्ष को खरी-खरी

'जोर-जोर से झूठ बोलना और दोहराना राहुल गांधी की नीति'

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष व कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की किसान नेताओं से मुलाकात के बाद बीजेपी हमलावर है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने राहुल गांधी पर भारत-यूएस ट्रेड डील को लेकर किसानों और मछुआरों को गुमराह करने का आरोप लगाया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि हाल में किए गए मुक्त व्यापार समझौतों एवं भारत-अमेरिका व्यापार समझौते में देश के किसानों और मछुआरों के हितों की पूरी तरह से रक्षा की गई है। उन्होंने कांग्रेस के शीर्ष नेता राहुल गांधी पर झूठ बोलकर किसानों एवं मछुआरों को गुमराह करने और भ्रम पैदा करने की कोशिश करने का आरोप लगाया।

राहुल ने शुरू की झूठ बोलने की नई परंपरा - राहुल गांधी पर तीखा हमला बोलते हुए अमित शाह ने आरोप लगाया कि राहुल गांधी ने रोजाना झूठ बोलने की एक नई परंपरा शुरू कर दी है। पुडुचेरी के कराईकल में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की एक बड़ी रैली को संबोधित करते हुए शाह ने कहा, झूठ बोलना, जोर-जोर से झूठ बोलना और उसे दोहराना राहुल गांधी की नीति है। लेकिन लोग आपकी झूठ गढ़ने वाली फैक्टरी को पहचान चुके हैं।

मुंबई में बड़ा हादसा: मुलुंड में मेट्रो पिलर का हिस्सा गिरा

ऑटो और कार के उड़े परखच्चे, 4 लोग घायल

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई के मुलुंड (पश्चिम) इलाके में शनिवार दोपहर को एक बड़ा हादसा हुआ। इस हादसे में एक निर्माणाधीन मेट्रो पिलर का बड़ा हिस्सा गिरने से ऑटो और कार चकनाचूर हो गए। हादसे में 4 लोगों घायल हुए हैं। मौके पर मौजूद लोगों के अनुसार, हादसा दोपहर करीब 12:20 बजे हुआ जब यातायात सामान्य रूप से चल रहा था। अचानक पिलर का एक हिस्सा ढह गया, जिसकी चपेट में आकर ऑटो रिक्शा पूरी तरह पिचक गया। घायलों को तुरंत पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहाँ उनका उपचार जारी है।

नवपदस्थ आयुक्त जनसम्पर्क एवं प्रबंध संचालक, मप्र माध्यम मनीष सिंह ने जनसंपर्क संचालनालय में पदभार ग्रहण किया।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने प्रदेशवासियों को दी महाशिवरात्रि की शुभकामनाएँ

भोपाल। उपमुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने समस्त प्रदेशवासियों को पावन पर्व महाशिवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई दी है। उन्होंने कहा कि महाशिवरात्रि का यह पवित्र पर्व भगवान शिव की आराधना, तप, संयम और आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक है। यह उत्सव हमें सत्य, करुणा और सेवा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने बाबा महाकाल से सभी नागरिकों के जीवन में सुख, समृद्धि, शांति और उत्तम स्वास्थ्य की प्रार्थना की है।

क्रिकेट

विजय रांगणेकर

भारत-पाक क्रिकेट मैच

दीवानगी, तनाव, और रोमांच का अलहिदा आलम

क्रिकेट की दुनिया के सबसे ज्यादा कट्टर खेल प्रतिद्वंद्वियों में से एक है - भारत और पाकिस्तान। क्रिकेट के मैदान पर दोनों देशों की तनातनी का इतिहास 7 दशकों पुराना है। वर्ष 1952 में दोनों देशों के बीच सबसे पहले टेस्ट क्रिकेट में आमना-सामना हुआ था। इसके बाद भारत-पाक के बीच पहला वनडे 1978 में और पहला टी20 मुकाबला टी20 वर्ल्ड कप 2007 में खेला गया था। खास बात ये है कि दोनों ही टीमों के बीच इन सभी फॉर्मेट का पहला मुकाबला भारत ने ही जीता है. यानी की पाकिस्तान पर भारत के दबदबे की शुरुआत आज से 74 साल पहले ही हो गई थी। क्रिकेट प्रेमियों को भारत और पाकिस्तान के बीच मुकाबले का बेसब्री से इंतजार रहता है। दोनों देशों के बीच तल्ख रिश्तों के कारण सिर्फ आईसीसी टूर्नामेंट में ही दोनों टीमें आमने-सामने होती हैं. इसी वजह से यह मुकाबले हाई वोल्टेज होते हैं और पूरी दुनिया की इन पर नजर रहती है। वनडे विश्व कप की तरह टी20 में भी भारत का पलड़ा पाकिस्तान पर हमेशा भारी ही रहा है. टी20 विश्व कप के इतिहास में दोनों टीमें 8 बार आमने-सामने हुई हैं और सिर्फ एक बार पाकिस्तान को जीत हासिल हुई है। कुछ दिनों तक पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ मैच न खेलने का ड्रामा किया था, लेकिन अंततः उसने खेलने के लिए हामी भर दी है। जाहिर है कि क्रिकेट देखने वाले लोग टी20 विश्व कप 2026 में एक बार फिर भारत और पाकिस्तान को मैदान में आमने-सामने देखेंगे।

इन दो देशों के बीच प्रत्येक क्रिकेट मैच में खिलाड़ियों को तो तनाव रहता ही है, दर्शकों, न सिर्फ भारतीय बल्कि विदेश के भी। इनके बीच मुकाबले को लेकर दीवानगी, तनाव, उत्सुकता, रोमांच और दिलचस्पी का अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि टी20 विश्व कप के इस मुकाबले के सभी टिकट कुछ मिनटों में ही बिक चुके हैं।

टीवी रेटिंग्स फर्मों और कई अन्य रिपोर्टों के मुताबिक, भारत-पाकिस्तान क्रिकेट मैच को दुनिया भर में करीब एक अरब लोग देखते है। 2011 के विश्व कप सेमीफाइनल में दोनों टीमों के बीच हुए मैच को 988 मिलियन दर्शकों ने टेलीविजन में देखा था। 2015 के विश्व कप के दौरान भारत-पाकिस्तान मैच की सारे टिकट 12 मिनट में बिक गए थे। एशिया कप 2022 के ग्रुप ए में 28 अगस्त को भारत और पाकिस्तान के बीच मुकाबला विश्व कप से अलावा अब तक का सबसे ज्यादा देखा जाने वाला टी20 मैच बन गया है। संयुक्त अरब अमीरात में एशिया कप 2022 के मैचों को 176 मिलियन दर्शकों ने देखा। देश में स्टार स्पोर्ट्स और डीडी स्पोर्ट्स के प्रसारण से देखे गए शहरी और ग्रामीण नंबरों के संयोजन के अनुसार, एशिया कप 2022 में भारत-पाकिस्तान लीग मैच ने 133 मिलियन की संख्या दर्ज की। एशिया कप 2016 में इन दोनों टीमों के बीच हुए मुकाबले की तुलना में लगभग 30 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

टी20 वर्ल्ड कप में भारत और पाकिस्तान पहली पर 2007 में आमने-सामने आए थे। डरबन में खेला गया यह मैच टाई रहा और फिर बॉल-आउट में भारत को जीत मिला था। इसके बाद उसी साल फाइनल में भारत ने पाकिस्तान को 5 रन से हराकर पहला टी20 विश्व कप का खिताब अपने नाम किया था। उस समय टीम इंडिया के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी थे। टी20 वर्ल्ड कप में पाकिस्तान ने भारत को साल 2021 में हराया था। दुबई में दोनों के बीच खेले गए मैच में पाकिस्तान ने भारत को 10

15 साल की नाबालिग ने फांसी लगाकर सुसाइड किया

छोटे भाई ने सबसे पहले देखा बहन का शव, मां-पिता को कॉल पर सूचना दी

भोपाल (नप्र)। सूखी सेवनिया थाना इलाके में रहने वाली 15 साल की किशोरी ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घर के एक कमरे में किशोरी ने अपने दुपट्टे का फंदा तैयार कर फांसी लगाई है। शुक्रवार रात फंदे पर लटके शव को देखने के बाद परिजनों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मर्ग कायम कर केस की जांच शुरू कर दी है। सुखी सेवनिया थाने के एसआई यादव ने बताया कि 15 वर्षीय काजल बंजारा पिता रमेश बंजारा सुखी शिवन्या बंजारा बस्ती की रहने वाली थी। वह पांचवीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ चुकी थी। उसके माता-पिता फेरी लगाकर प्लास्टिक आइटम बेचने का काम करते हैं।

सुसाइड नोट नहीं मिला

मां और पिता हर रोज की तरह शुक्रवार सुबह घर से निकल गए थे। छोटे भाई ने बड़ी बहन के शव को फंदे पर लटका देखने के बाद मां-पिता को कॉल पर सूचना दी। शोर मचा कर पड़ोसियों को बुलाया। मां-पिता ने घर पहुंचने के बाद पुलिस को मामले की जानकारी दी। पुलिस की मौजूदगी में शव को फंदे से उतरा गया। कमरे की तलाशी में पुलिस को कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। लिहाजा आत्महत्या की कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। पुलिस को दिए बयानों में परिजनों ने सुसाइड का कोई ठोस कारण नहीं बताया है।

शव परिजनों को सौंपा- इसी के साथ बच्ची को हाल ही के दिनों में किसी भी तरह से डांट फटकार करने की बात से भी इनकार किया। शनिवार दोपहर पीएम के बाद शव परिजनों के हवाले कर दिया गया है। पुलिस का कहना है कि मामले की सभी एंगल पर जांच की जा रही है। पीएम रिपोर्ट मिलने के बाद आगे की जांच की दिशा तय की जाएगी।

भोपाल में 30 एकड़ जमीन पर अवैध निर्माण तोड़ा

केरवा डैम के कैचमेंट एरिया की जमीन एनजीटी के आदेश पर कार्रवाई

भोपाल (नप्र)। नेशनल ग्रीन ट्रिब्नल (एनजीटी) के आदेश पर शनिवार को भोपाल में बड़ी कार्रवाई की गई। केरवा डैम के कैचमेंट एरिया में 30 एकड़ जमीन के अवैध निर्माण पर जिला प्रशासन की जेसीबी चली। कार्रवाई के दौरान रसूखदारों में हड़कंप मच गया। हुजूर तहसीलदार अनुराग त्रिपाठी एवं टीम ने यह कार्रवाई की। जानकारी के अनुसार, बरखेड़ी बजायाफत की पंचायत कुशालपुरा में करीब 30 एकड़ जमीन पर अवैध निर्माण की सूचना के बाद जिला प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची। जेसीबी की मदद से बाउंड्रीवॉल, सीमेंट क्रांकीट रोड उखाड़ दी गई।

फिल्म डायरेक्टर की जमीन रही

प्रशासनिक सूत्रों की माने तो यह जमीन फिल्म डायरेक्टर प्रकाश झा से कुछ लोगों ने ली थी। जहां पर बिना अनुमति के निर्माण किए गए। कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह के निर्देश के बाद यह कार्रवाई की गई। यह जगह केरवा डैम से जुड़ी है। एनजीटी ने बड़ा तालाब समेत अन्य जलस्रोतों के कैचमेंट एरिया से अतिक्रमण हटाने के आदेश दे रखे हैं। जमीन की कीमत करोड़ों रुपए बताई जा रही है।

वन्य जीव और वनों के लिए बनेगा लीगल सेल

वन बल प्रमुख ने कानूनी प्रकोष्ठ का गठन किया, महाशिवरात्रि से शुरू होगा काम

भोपाल (नप्र)। पीसीसीएफ विजय अंबाडे ने न्यायालयीन मामलों में समय पर पैरवी नहीं होने से विभाग और सरकार को होने वाली नुकसान को गंभीरता से लिया है।

कोर्ट पहुंचने वाले मामलों में विभाग की जीत और अदालती मामलों को सुव्यवस्थित करने तथा कानूनी जवाबदेही तय करने के लिए पीसीसीएफ अंबाड़े ने 'वन भवन' मुख्यालय में 'लीगल सेल' (कानूनी प्रकोष्ठ) की स्थापना की है। यह प्रकोष्ठ 15 फरवरी को महाशिवरात्रि पर्व से वजूद में आ जाएगा।

इसको लेकर पीसीसीएफ एंड हॉफ की ओर से जारी आदेश में कहा गया है कि वन्यजीवों को न्याय दिलाने के लिए यह सेल विभाग के कानूनी पक्ष को मजबूत करके वन शत्रुओं, विशेष रूप से बाघों के शिकारियों को सख्त से सख्त सजा (दोषसिद्धि) के लिए काम करेगा।

15 फरवरी से शुरू होगा लीगल सेल का काम- आदेश में कहा गया है कि कई न्यायालयीन मामलों में प्रभारी अधिकारी (ओआईसी) समय पर जवाबदावा प्रस्तुत नहीं कर पा रहे हैं या सुनवाई के दौरान अनुपस्थित रहने जैसी स्थितियां सामने आ रही हैं। इससे विभाग की छवि प्रभावित हो रही है और न्यायालयीन केसों में विभाग का पक्ष कमजोर पड़ रहा है। इसलिए वन मुख्यालय, वन भवन, भोपाल में 'विधि प्रकोष्ठ' बनेगा।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक (उत्पादन), एमपी को प्रकोष्ठ का नियंत्रणकारी अधिकारी बनाया गया है। विभागीय मामलों के समन्वय और समीक्षा के लिए सूचना प्रौद्योगिकी कक्ष द्वारा सहयोग और पोर्टल निर्माण में मदद की जाएगी।

आवश्यकतानुसार संबंधित अधिकारियों, कर्मचारियों को विधि प्रकोष्ठ में जिम्मेदारी दी जाएगी। यह लीगल सेल 15 फरवरी 2026 से पूर्ण रूप से कार्य प्रारंभ करेगा।

डीएफओ विपिन पटेल ने इस्तीफा वापस लिया

वन विभाग को चिट्ठी लिखकर कहा- मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी, 4 फरवरी को किया था रिजाइन

भोपाल (नप्र)। जबलपुर में डीएफओ योजना के पद पर पदस्थ एमपी कैडर के 2013 बैच के आईएफएस अधिकारी विपिन पटेल ने आखिरकार अपना इस्तीफा वापस ले लिया है। उनके इस्तीफा देने के बाद धर्मपत्नी ने पीसीसीएफ एंड हॉफ को आवेदन देकर इस्तीफा न मंजूर करने का आग्रह किया था और कहा था कि पति विपिन पटेल की मानसिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण उन्होंने इस्तीफा दिया है।

विपिन पटेल की पत्नी के आवेदन के बाद पीसीसीएफ एंड हॉफ ने विपिन पटेल से तीन दिन में स्पष्टीकरण मांगा था जिसके बाद पटेल ने इस्तीफा वापस लेने की बात कही है।

रीवा, दमोह, सतना और अनूपपुर के डीएफओ रह चुके पटेल ने इस्तीफा देने की वजह निजी कारण बताया था। 4 फरवरी को पीसीसीएफ और हॉफ को भेजे इस्तीफे में विपिन पटेल ने कहा था कि वे अपनी आईएफएस सर्विस से अनकंडीशनल इस्तीफा दे रहे हैं, जिसकी वजह निजी है। इस्तीफे में पटेल ने कहा था कि उनका इस्तीफा कांपीटेंट अथॉरिटी को फॉरवर्ड करें और आईएफएस सेवा से उन्हें मुक्त किया जाए। पटेल ने इस्तीफे की कॉपी वन विभाग के सचिव को भी भेजी थी।

इस्तीफा वापसी का पत्र वन विभाग को दिया- भारतीय वन सेवा के अधिकारी विपिन कुमार पटेल का इस्तीफा वापसी से संबंधित पत्र वन विभाग को मिल गया है। पत्र में पटेल ने लिखा है कि जल्दबाजी में उन्होंने यह कदम उठा लिया था और उनकी मानसिक स्थिति उस समय ठीक नहीं थी। वर्तमान में पटेल डीएफओ वर्किंग प्लान जबलपुर में पदस्थ हैं। वन विभाग ने पत्नी के पत्र के आधार पर पटेल से ई-मेल के जरिए स्पष्टीकरण मांगा था और कहा था कि वे तीन दिन के भीतर स्थिति स्पष्ट करें अन्यथा उनके त्यागपत्र पर एकपक्षीय निर्णय लेकर उसे स्वीकार कर लिया जाएगा।

सागर में लोकायुक्त में शिकायत, सतना, अनूपपुर में विवादित रहे- आईएफएस अधिकारी विपिन पटेल सतना, अनूपपुर में विवादित रहे थे। उनके विरुद्ध सागर लोकायुक्त पुलिस में भी शिकायत की गई थी। पटेल ने अनूपपुर डीएफओ रहने के दौरान एक विवादित आदेश जारी किया था। जिसका प्रदेश भर में विरोध हुआ था। उनके द्वारा जारी आदेश में कहा गया था उनके क्षेत्राधिकार में वनकर्मियों को उच्च पदभार दिए गए हैं, उसे तत्काल निरस्त कर दिया गया है। आदेश में यह भी लिखा था कि सभी स्टाफ कर्मी मूल पद पर वापस आकर काम करेंगे। डीएफओ विपिन पटेल द्वारा 4 नवंबर को आदेश दिया गया था। इसके बाद मप्र कर्मचारी मंच ने सीएम को पत्र लिखकर इसका विरोध जताया था। दरअसल 15 अक्टूबर को वन विभाग ने आदेश जारी किया था कि 2025 के पदोन्नति आदेश लागू होने की वजह से कर्मचारी मूल पद पर लौटेंगे। इसलिए अब नए कर्मचारियों को उच्च पदभार दिया गया तो इससे प्रमोशन के मामलों में जटिलताएं आएंगी। इसलिए शासन उच्च पदभार वाले पूर्व के निर्देश रद्द करता है। इस पर कर्मचारी मंच के प्रदेश अध्यक्ष अशोक पांडे ने कहा था कि किसी वन मंडल ने ऐसा आदेश नहीं दिया है। अनूपपुर डीएफओ भी इसके लिए अधिकृत नहीं हैं। ऐसे आदेश का अधिकार सिर्फ सीसीएफ शहडोल को ही है। उन्होंने आरोप लगाया कि डीएफओ सागर और सतना में रहते हुए भी विवादों में रहे थे।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल से प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव डॉ. पी.के. मिश्रा की सौजन्य भेंट

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल से प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव डॉ. पी.के. मिश्रा ने शनिवार को लोकभवन में सौजन्य भेंट की।

राज्यपाल श्री पटेल के साथ विभिन्न विषयों पर चर्चा की। राज्यपाल श्री पटेल का प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव डॉ. मिश्रा ने पुष्प गुच्छ भेंट कर अभिनंदन किया। राज्यपाल श्री पटेल ने डॉ. मिश्रा को अंग वस्त्रम् और साँची स्तूप की प्रतिकृति स्मृति स्वरूप भेंट की।

रेशमा ने बनाया था खाटू श्याम घूमने का प्लान

जयपुर में जबलपुर के पांच लोगों की मौत

घरों के आसपास सन्नाटा, परिजन राजस्थान रवाना

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में रहने वाली एक महिला सहित पांच युवकों की राजस्थान के जयपुर में सड़क दुर्घटना में दर्दनाक मौत हो गई। महिला रेलवे के शासकीय स्कूल में टीचर थी और ड्राइवर व उसके तीन दोस्तों के साथ उज्जैन रास्ते से खाटू श्याम दर्शन करने जा रही थी। हादसा राजस्थान के चाकसू में राष्ट्रीय राजमार्ग 52 पर हुआ। 12 फरवरी को सभी लोग कार में सवार होकर उज्जैन पहुंचे। यहां महाकाल दर्शन किए और शुक्रवार रात को खाटू श्याम दर्शन के लिए रवाना हो गए। धार्मिक यात्रा का प्लान जबलपुर के नक्षत्र नगर स्टार सिटी निवासी रेशमा श्रीवास्तव (48 वर्ष) ने बनाया था।

यह बात उसने अपने कार चालक अनुराग रजक से कही तो उसने अपने दोस्तों को भी साथ ले जाने का प्लान बना लिया। इस पर रेशमा ने हामी भरी तो एक ही कार से रेशमा सहित अनुराग, राहुल रजक, पीयूष राय, शानू उज्जैन जाने के लिए निकले। वहां से दर्शन करने के बाद सभी लोग खाटू श्याम मंदिर जा रहे थे। तभी रास्ते में शनिवार को तड़के उनकी कार एक ट्रॉले से भिड़ गई। दुर्घटना में रेशमा और तीन युवकों की मौके पर ही मौत हो गई जबकि एक युवक ने अस्पताल ले जाते समय रास्ते में दम तोड़ दिया।

हादसे के बाद जबलपुर में मृतकों के घरों के आसपास सन्नाटा पसर गया है और परिजन ज्यादा बात नहीं कर रहे हैं। चारों मृतक युवक माढ़ोताल, करमेता के जबकि अमृत महिला रेशमा श्रीवास्तव सदर की रहने वाली हैं।

पीयूष की मां से बात की थी रेशमा ने- मृतक पीयूष रजक के मामा करमेता निवासी संजीव चौकसे ने बताया कि उन्हें शनिवार सुबह राजस्थान पुलिस ने फोन किया। जयपुर के पास दुर्घटना में भांजे की कार की दुर्घटना होना बताया। हादसे में सभी लोगों के मारे जाने की सूचना दी। दुर्घटना में मृत अनुराग रजक वाहन चालक था। वह रेशमा श्रीवास्तव की कार चलाता था। अनुराग की राहुल रजक और पीयूष से दोस्ती थी।

राहुल भी पहले रेशमा की कार चलाता था। पीयूष

ने घर पर बात की थी तो पहले दीदी ने मना कर दिया। उसके बाद रेशमा ने पीयूष की मम्मी से बात की और सभी लोग तीर्थ यात्रा निकले। किसी को पता नहीं था कि इतना दर्दनाक हादसा हो जाएगा।

परिजन राजस्थान रवाना

घटना की जानकारी जैसे ही मिली युवकों के स्वजन पर दुखों पर पहाड़ टूट पड़ा। उनके घर के आसपास सन्नाटा पसर गया। कुछ परिचित मृतकों के घर पहुंच गए। उसके बाद पीयूष और अनुराग के स्वजन कुछ परिचितों के साथ कार से राजस्थान के लिए रवाना हो गए हैं। पुलिस ने शवों को चाकसू उप जिला हॉस्पिटल की मॉर्चुरी में रखवाया है। वहीं, दुर्घटना में घायल रेशमा श्रीवास्तव के घर पर भी सन्नाटा है। रेशमा के स्वजन भी शव लेने के लिए राजस्थान रवाना हो गए हैं।

मृतक रेशमा श्रीवास्तव रेलवे शासकीय स्कूल में पदस्थ थीं। पति एलआईसी से रिटायर्ड हैं। घर में दो बेटी हैं। दोनों ही जबलपुर में पढ़ाई करती हैं। घटना की जानकारी लगते ही रेशमा के पति जहां बेसुध हो गए हैं। वहीं दोनों को बेटियों को मां की मौत की बात नहीं बताई है।

वैलेंटाइन-डे पर चिनार पार्क के बाहर नारेबाजी

लट्ठ लेकर पहुंचे कार्यकर्ता, आपत्तिजनक स्थिति मिलने पर मुंडन की चेतावनी दी थी, पार्क के बाहर पुलिस बल था तैनात

भोपाल (नप्र)। वैलेंटाइन-डे के मौके पर राजधानी में विरोध का असर जमीन पर भी दिखाई दिया। अंतरराष्ट्रीय हिन्दू परिषद के कार्यकर्ता शुक्रवार को चिनार पार्क पहुंच गए थे। कार्यकर्ता हाथों में लट्ठ लेकर पार्क के बाहर जमा हुए और नारेबाजी की।

संगठन के पदाधिकारियों ने चेतावनी दी थी कि यदि कोई जोड़ा आपत्तिजनक स्थिति में मिला तो उसका मुंडन कर विरोध जताया जाएगा। कार्यकर्ताओं का कहना है कि वे भारतीय संस्कृति और मर्यादा के खिलाफ किसी भी गतिविधि को बर्दाश्त नहीं करेंगे।

पार्क के बाहर पुलिस तैनात थी- स्थिति को देखते हुए पार्क के बाहर पुलिस बल तैनात किया गया है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए एहतियातन सुरक्षा व्यवस्था की गई है और किसी भी तरह की अवैध या हिंसक कार्रवाई की अनुमति नहीं दी जाएगी।

गौरतलब है कि वैलेंटाइन डे को लेकर शहर में विभिन्न संगठनों की ओर से विरोध दर्ज कराया जा रहा है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि सार्वजनिक स्थलों पर शांति भंग करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

बजरंग दल की चेतावनी: मुंह काला करेंगे- राष्ट्रीय बजरंग दल ने सार्वजनिक रूप से सख्त चेतावनी जारी करते हुए कहा है कि वैलेंटाइन डे के नाम पर किसी भी तरह की अश्लीलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। प्रांत मंत्री राकेश प्रजापति ने तीखे शब्दों

में कहा कि यदि कोई युवक-युवती सार्वजनिक स्थानों पर आपत्तिजनक स्थिति में मिले, बाबू-सोना करते दिखाई दें, तो उनका सिर मुंडवाकर मुंह काला किया जाएगा और सड़कों पर जुलूस निकाला जाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि जहां कहीं भी अश्लीलता करते पाए गए, वहां शरीर का कोना-कोना तोड़ देंगे। संगठन का आरोप है कि वैलेंटाइन डे के बहाने शहर में योजनाबद्ध तरीके से अशोभनीय गतिविधियां बढ़ाई जाती हैं, जिसका राष्ट्रीय बजरंग दल विरोध करेगा। प्रशासन ने कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी है।

15 निगरानी दस्ते गठित

वैलेंटाइन डे पर अंतरराष्ट्रीय हिंदू परिषद और राष्ट्रीय बजरंग दल ने पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का विरोध करते हुए सख्त रुख अपनाया है। वहीं संस्कृति बचाओ मंच ने शहरभर में 15 निगरानी दस्ते गठित कर होटल, मॉल और पार्कों पर नजर रखने की घोषणा की है। इससे एक दिन पहले शुक्रवार को हिंदू परिषद और बजरंग दल ने 'दंड पूजन' कर विरोध दर्ज कराया। संगठन के प्रांत मंत्री राकेश प्रजापति ने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्रेम मर्यादा और सम्मान से जुड़ा है, लेकिन पश्चिमी प्रभाव में सार्वजनिक अश्लीलता को बढ़ावा दिया जा रहा है। जिसे भोपाल में किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि संगठन सच्चे प्रेम या पारिवारिक मूल्यों के खिलाफ नहीं, बल्कि सार्वजनिक मर्यादा भंग करने वालों के विरोध में हैं।

बजरंग दल की एक दर्जन टीमें थीं तैनात

संगठनों ने ऐलान किया है कि 14 फरवरी को राष्ट्रीय बजरंग दल की करीब एक दर्जन टीमें शहर के प्रमुख पार्कों, सार्वजनिक स्थलों और भीड़-भाड़ वाले इलाकों में तैनात रहेंगी। किसी भी आपत्तिजनक गतिविधि पर सार्वजनिक विरोध दर्ज कराया।

विशेष आयोजन न करें होटल संचालक- उधर, संस्कृति बचाओ मंच ने होटल संचालकों को चेतावनी दी है कि वैलेंटाइन डे पर विशेष आयोजन न करें। मंच पदाधिकारियों ने कहा कि भारतीय संस्कृति और संस्कार देश की पहचान हैं। युवाओं से अपील की गई है कि वे वैलेंटाइन डे के बजाय अगले दिन पड़ने वाली महाशिवरात्रि पर भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा-अर्चना करें।

मां ने तीन बेटियों को दिया जहर, खुद भी पीया

- आलीराजपुर में तीनों की मौत, महिला की हालत गंभीर; पति एक महीने पहले गया गुजरात

आलीराजपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश के आलीराजपुर जिले के अडवाड़ा के माफीदार फलिया में शुक्रवार शाम दिल दहला देने वाली घटना सामने आई। एक महिला ने अपनी तीन मासूम बेटियों को कीटनाशक पिलाने के बाद खुद भी जहर निगल लिया। तीनों बच्चियों सावित्री (7), कार्तिका (5) और दिव्या (3) की मौत हो गई, जबकि मां नूरीबाई की हालत गंभीर बनी हुई है। घटना के समय पति मुकेश गुजरात में मजदूरी कर रहा था। परिजन सभी को जिला अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां एक बच्ची को मृत घोषित कर दिया गया। दो अन्य को हालत बिगड़ने पर गुजरात के दाहोद रेफर किया गया, लेकिन उन्होंने रास्ते में दम तोड़ दिया।

एसपी पहुंचे गांव, परिवार से की पूछताछ- घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस अधीक्षक रघुवंश सिंह आम्बुआ थाना प्रभारी मोहन डावर के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने मृतक बच्चियों के पिता के गुजरात में होने, पति-पत्नी के संबंध, किसी हालिया विवाद और दूसरी शादी जैसी संभावनाओं को लेकर परिजन से सवाल किए।

पारिवारिक विवाद की जताई जा रही आशंका- परिजनों ने बताया कि मुकेश और नूरीबाई की शादी 2016 में हुई थी। मुकेश करीब एक महीने पहले मजदूरी के लिए गुजरात गया था, जहां खेत किराए पर लिया हुआ है।

शिव के प्रतीक : सनातन से विज्ञान तक, शक्ति और संतुलन

सनातन धर्म की आत्मा में यदि कोई देवतत्व सबसे अधिक व्यापक, गूढ़ और कालातीत है, तो वह भगवान शिव हैं। वे सृजन और संहार के बीच संतुलन का वह सूत्र हैं, जिस पर संपूर्ण ब्रह्मांड टिका है। इसी कारण उन्हें आदि, अनंत और महाकाल कहा गया जो समय की सीमाओं से परे भी विद्यमान हैं। आधुनिक संदर्भ में उन्हें प्रतीकात्मक रूप से महावैज्ञानिक भी कहा जा सकता है, क्योंकि उनके स्वरूप और दर्शन में ऐसे तत्व हैं, जो आज के विज्ञान की कई अवधारणाओं से साम्य रखते हैं। शिव की आराधना केवल मूर्ति, मंत्र या विधि तक सीमित नहीं है। वह जीवन के गहन सत्य को समझने की साधना है। उन्हें प्रायः संहार का देव कहा जाता है, किंतु उनका संहार विनाश का नहीं, बल्कि अनावश्यक के विसर्जन और आवश्यक के संरक्षण का प्रतीक है। यह संतुलन और शुद्धि की प्रक्रिया है।

महाशिवरात्रि विशेष

रागिनी श्रीवास्तव

लेखक कनाडा निवासी साहित्यकार हैं।

जटाजूट मद गंग हलक तक, शीश चंद्र विराजे।
भस्म भभूत अंग लिपटे, त्रिनेत्र सत्य साजे।
डमरू बोले नाद निरंतर, त्रिशूल धरे कर शोभा।
नृत्य करें महादेव तांडव, जगत करे जय-घोषा'॥

(भगवान शिव के बालों (जटाओं) से गंगा नदी निकलती है। उनके सिर पर चाँद है। उनके पूरे शरीर पर राख लगी है। उनकी तीन आँखें हैं। उनके हाथ में डमरू और त्रिशूल है। वे ज़ोर से तांडव नृत्य कर रहे हैं।

बचपन में कथक नृत्य सीखते समय इस तोड़े के बोलों ने भगवान् शिव के प्रति मेरी आस्था को पहली बार जगाया, उन लयबद्ध शब्दों में शिव की शक्ति, सौम्यता और दिव्यता इतनी स्पष्ट रूप से महसूस होती थी मन मंत्रमुग्ध हो जाता था।

समय के साथ यह आस्था और भी प्रगाढ़ होती गई। आज, इस डिजिटल युग में, जब तेज़ी से बदलती दुनिया और तकनीक हमारी दृष्टि और अनुभवों को परिभाषित कर रही है, तब भी शिव के प्रतीक और उनका तांडव नृत्य उतना ही प्रासंगिक लगता है।

सनातन धर्म की आत्मा में यदि कोई देवतत्त्व सबसे अधिक व्यापक, गूढ़ और कालातीत है, तो वह भगवान शिव हैं। वे सृजन और संहार के बीच संतुलन का वह सूत्र हैं, जिस पर संपूर्ण ब्रह्मांड टिका है। इसी कारण उन्हें आदि, अनंत और महाकाल कहा गया जो समय की सीमाओं से परे भी विद्यमान हैं। आधुनिक संदर्भ में उन्हें प्रतीकात्मक रूप से महावैज्ञानिक भी कहा जा सकता है, क्योंकि उनके स्वरूप और दर्शन में ऐसे तत्व हैं, जो आज के विज्ञान की कई अवधारणाओं से साम्य रखते हैं।

शिव की आराधना केवल मूर्ति, मंत्र या विधि तक सीमित नहीं है। वह जीवन के गहन सत्य को समझने की साधना है। उन्हें प्रायः संहार का देव कहा जाता है, किंतु उनका संहार विनाश का नहीं, बल्कि अनावश्यक के विसर्जन और आवश्यक के संरक्षण का प्रतीक है। यह संतुलन और शुद्धि की प्रक्रिया है।

पुराणों में वर्णित शिव-पार्वती विवाह वैराग्य और गृहस्थ जीवन के अद्भुत समन्वय का प्रतीक है। शिवलिंग का स्वरूप यह संकेत देता है कि शिव निराकार भी हैं और साकार भी । वे स्वरुप से हटकर भी संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त हैं। समुद्र-मंथन के समय कालकूट विष का पान कर शिव ने यह सिद्ध किया कि सच्ची शक्ति भोग में नहीं, बल्कि त्याग और उत्तरदायित्व में निहित होती है।

आज का मानव विज्ञान और तकनीक की अभूतपूर्व ऊँचाइयों को छू रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, परमाणु ऊर्जा, जैव-प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष विज्ञान ने मानवीय सामर्थ्य को लगभग असीम बना दिया है। किंतु इसी के समानांतर नैतिक संकट, मानसिक तनाव, सामाजिक असंवेदनशीलता और पर्यावरणीय असंतुलन भी बढ़े हैं। ऐसे समय में 'ॐ नमः शिवाय' या 'हर हर महादेव' का उद्घोष भय को कम करता है, मन-तन में ऊर्जा भर कर सामूहिक साहस का संचार करता है।

शिव के प्रतीक किसी अंधविश्वास का नहीं, बल्कि नैतिक अनुशासन का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्हें आदियोगी कहा गया है। योग और ध्यान केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की आवश्यकता हैं। आज न्यूरोसाइंस और चिकित्सा विज्ञान भी स्वीकार करते हैं कि योगासन तंत्रिका तंत्र और हार्मोनल संतुलन को सुदृढ़ करते हैं, जबकि ध्यान मानसिक शांति, एकाग्रता और भावनात्मक संतुलन को बढ़ाता है।

मान्यता है कि राजा भगीरथ की तपस्या से गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर आईं। परंतु उनका प्रवाह अत्यंत प्रबल था, जो पृथ्वी और जीव-जंतुओं के लिए हानिकारक हो सकता था। इसलिए, भगवान शिव ने गंगा को अपनी जटाओं में धारण किया और धीरे-धीरे धरती पर प्रवाहित किया। गंगा पवित्रता और जीवन की प्रतीक हैं, जबकि शिव संयम और शक्ति के देवता हैं। शिव द्वारा गंगा को संभालना यह सिखाता है कि बड़ी शक्ति को धैर्य और विवेक से नियंत्रित किया जाए तभी जीवन के लिए कल्याणकारी हो सकती है।

त्रिशूल शिव-दर्शन का मूल सूत्र है। यह इच्छा, ज्ञान और क्रिया के संतुलन का प्रतीक है। यह संदेश देता है कि तकनीकी प्रगति तभी सार्थक है, जब वह नियंत्रण और नैतिकता से जुड़ी हो। यही सिद्धांत नीति-निर्माण, शासन, विज्ञान और सामाजिक परिवर्तन–हर क्षेत्र में समान रूप से लागू होता है। सेना और नौसेना में त्रिशूल का प्रयोग भी इस बात को रेखांकित करता है कि शक्ति आक्रामक नहीं, बल्कि नियंत्रित और निर्णायक होनी चाहिए।

डमरू ब्रह्मांडीय नाद और निरंतर गति का प्रतीक है। जीवन स्थिर नहीं, सतत परिवर्तनशील है। आधुनिक विज्ञान भी स्वीकार करता है कि ध्वनि और तरंगें ऊर्जा का रूप हैं–चाहे वह अल्ट्रासाउंड तकनीक हो या रडार प्रणाली।

शिव का तीसरा नेत्र विनाश का नहीं, बल्कि सत्य-बोध का नेत्र है। यह तभी खुलता है, जब असत्य, अन्याय और अहंकार अपनी सीमाएँ लांघ जाते हैं। फेक न्यूज़ और दुष्प्रचार के इस युग में यह प्रतीक हमें सच को पहचानने और उसके पक्ष में निर्भय होकर खड़े होने की प्रेरणा देता है।

शिव के शरीर पर लगी भस्म जीवन की क्षणभंगुरता और अहंकार-क्षय का संदेश देती है। गले में विराजमान नाग शक्ति और ऊर्जा के अनुशासन का प्रतीक है। यह सिखाता है कि शक्ति का दमन नहीं, बल्कि संयम आवश्यक है। उपभोगवाद के इस युग में शिव का वैराग्य मानव को संतुलित और पर्यावरण-अनुकूल जीवन-शैली की ओर प्रेरित करता है।

तांडव भय का नहीं, परिवर्तन का नृत्य है। जब समाज और व्यवस्था जड़ हो जाती है और अन्याय सामान्य बन जाता है, तब तांडव आवश्यक हो जाता है पुरानी सोच के अंत और नई चेतनात्मक प्रणालियों के निर्माण के लिए। यह परिवर्तन हिंसक नहीं, बल्कि वैचारिक और नैतिक होना चाहिए। भोलेनाथ बिना भेदभाव वरदान देते हैं, किंतु हर वरदान के साथ उत्तरदायित्व भी जुड़ा होता है। रावण और भस्मासुर को प्राप्त शिव के वरदान और फिर उनका अंत यह सन्देश देता है कि विवेक के बिना प्राप्त शक्ति अंततः विनाश का कारण बन जाती है।

भारत का चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग स्थल का नाम 'शिव-शक्ति प्वाइंट' रखा जाना इस तथ्य का प्रतीक है कि आधुनिक विज्ञान में भी भारत अपनी सांस्कृतिक चेतना और दार्शनिक दृष्टि को साथ लेकर चलता है। यह नामकरण केवल एक भौगोलिक संकेत नहीं, बल्कि भारत की वैज्ञानिक क्षमता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास का वैश्विक प्रतीक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विज्ञान और अध्यात्म परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे को सशक्त बनाने वाले तत्व हैं।

शिव का प्रत्येक रूप, प्रत्येक आभूषण और प्रत्येक अस्त्र बाह्य शक्ति का नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना, संयम और संतुलन का प्रतीक है। वास्तविक विजय बाहरी युद्ध में नहीं, बल्कि स्वयं पर नियंत्रण और सत्य-बोध में है। उनकी कथाएँ केवल पौराणिक आख्यान नहीं, बल्कि जीवन के शाश्वत सूत्र हैं। वे चेतावनी भी देती है और मार्गदर्शन भी। इसीलिए शिव केवल पूज्य देव नहीं, बल्कि हर युग में मानव को आत्मचिंतन का दर्पण दिखाने वाले शाश्वत शिक्षक हैं।

भगवान शिव को विज्ञान से बहुत आगे दार्शनिक प्रतीक कहा जा सकता है।

जहाँ विज्ञान कैसे पर प्रश्न करता है,
वहाँ शिव प्रत्येक क्यों का उत्तर देते हैं।

शिवरात्रि : अंधकार के गर्भ से चेतना का उजास

उपवास का अर्थ देह को कष्ट देना नहीं, बल्कि इच्छाओं को शिथिल करना है। जागरण का आशय आँखें खुली रखना नहीं, चेतना को जागृत करना है। शिवरात्रि की परंपराएँ प्रतीकात्मक हैं—वे हमें भीतर झाँकने का अभ्यास कराती हैं। जब दीपक की लौ काँपती है, तब भी वह अंधकार को चुनौती देती है; यही मनुष्य का संकल्प है। इस रात का अंधकार भय नहीं, संभावना है—जहाँ से उजास जन्म लेता है। समकालीन संदर्भ में शिवरात्रि का अर्थ और व्यापक हो जाता है। यह प्रकृति के साथ सहअस्तित्व का संदेश देती है। शिव प्रकृति के देव हैं—पशुओं, नदियों, पर्वतों और वन्य जीवन के संरक्षक। आज जब पर्यावरण संकट गहराता जा रहा है, तब शिवरात्रि हमें स्मरण कराती है कि विकास का मार्ग प्रकृति-विरोध नहीं, प्रकृति-संवाद होना चाहिए। गंगा का प्रवाह केवल नदी नहीं, जीवन की निरंतरता का प्रतीक है; त्रिनेत्र केवल नेत्र नहीं, विवेक का उद्घाटन है।

महाशिवरात्रि विशेष

जयदेव राठी

लेखक एडवोकेट हैं।

शिवरात्रि केवल एक तिथि नहीं, बल्कि समय की धारा में ठहरकर स्वयं को देखने का अवसर है। यह वह रात है जब बाहरी जगत का कोलाहल धीमा पड़ता है और भीतर का आकाश बोलने लगता है। भारतीय सांस्कृतिक चेतना में शिवरात्रि का अर्थ उपवास, जागरण या पूजन तक सीमित नहीं रहा; यह आत्मसंयम, वैराग्य और सृजन के संतुलन का जीवंत रूपक है। यह रात हमें स्मरण कराती है कि जीवन केवल उत्सवों की चकाचौंध नहीं, बल्कि मौन की साधना भी है–जहाँ विचार ठहरते हैं और विवेक जन्म लेता है। शिव का स्वरूप विरोधाभासों का संगम है। वे संहारक भी हैं और सृजन के मूल भी। उनके गले में विष है, पर दृष्टि में करुणा। वे कैलास के शिखर पर विराजमान हैं, फिर भी श्मशान उनकी साधना-स्थली है। यह द्वैत नहीं, बल्कि समग्रता का दर्शन है–जीवन और मृत्यु, आसक्ति और विरक्ति, शक्ति और शांति–सबका संतुलन। शिवरात्रि इसी संतुलन की रात्रि है, जब मनुष्य अपने भीतर के उग्र और कोमल, दोनों पक्षों को स्वीकार करता है। शिवलिंग का अभिषेक शिवरात्रि की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विधि है। भक्तगण शिवालयों में जाकर शिवलिंग पर जल, दूध, दही, घी, शहद और गंगाजल चढ़ाते हैं। बेल पत्र शिव को अत्यंत प्रिय हैं, अतः शिवलिंग पर बेल पत्र अर्पित किए जाते हैं। धतूरा, आक के फूल, चमेली, कमल और गुलाब भी चढ़ाए जाते हैं।

रात्रि में प्रत्येक तीन घंटे पर शिवलिंग का पुनः अभिषेक किया जाता है। अभिषेक के समय भक्त प्रार्थना करते हैं कि जिस प्रकार वे शिवलिंग को स्नान करा रहे हैं, उसी प्रकार भगवान शिव उन्हें ज्ञान के अमृत से स्नान कराएं और उनके समस्त पापों को धो डालें। लोकमानस में शिवरात्रि विवाह का उत्सव भी है–शिव और शक्ति का मिलन। यह मिलन केवल पौराणिक कथा नहीं, बल्कि चेतना का संकेत है कि ऊर्जा (शक्ति) और विवेक (शिव) के बिना जीवन अधूरा है। आधुनिक समाज में जहाँ गति ने मनुष्य को थका दिया है, वहाँ शिवरात्रि ठहराव का प्रस्ताव रखती है। यह रात्रि कहती है–दौड़ते रहना ही प्रगति नहीं; कभी-कभी रुककर साँस लेना भी विकास है।

उपवास का अर्थ देह को कष्ट देना नहीं, बल्कि इच्छाओं को शिथिल करना है। जागरण का आशय आँखें खुली रखना नहीं, चेतना को जागृत करना है। शिवरात्रि की परंपराएँ प्रतीकात्मक हैं–वे हमें भीतर झाँकने का अभ्यास कराती हैं। जब दीपक की लौ काँपती है, तब भी वह अंधकार को चुनौती देती है; यही मनुष्य का संकल्प है। इस रात का अंधकार भय

नहीं, संभावना है–जहाँ से उजास जन्म लेता है। समकालीन संदर्भ में शिवरात्रि का अर्थ और व्यापक हो जाता है। यह प्रकृति के साथ सहअस्तित्व का संदेश देती है। शिव प्रकृति के देव हैं–पशुओं, नदियों, पर्वतों और वन्य जीवन के संरक्षक। आज जब पर्यावरण संकट गहराता जा रहा है, तब शिवरात्रि हमें स्मरण कराती है कि विकास का मार्ग प्रकृति-विरोध नहीं, प्रकृति-संवाद होना चाहिए। गंगा का प्रवाह केवल नदी नहीं, जीवन की निरंतरता का प्रतीक है; त्रिनेत्र केवल नेत्र नहीं, विवेक का उद्घाटन है। शिवरात्रि एक गहरी प्रतीकात्मक रचना है। यह रात्रि प्रश्न पूछती है–क्या हमने अपने भीतर के विष को पहचाना? क्या हम उसे करुणा में रूपांतरित कर पाए? शिव का विषपान आत्म-बलिदान का नहीं, आत्म-नियंत्रण का संदेश है। वे विष को भीतर रखते हैं, उगलते नहीं। आज के सार्वजनिक जीवन में यह संदेश और भी प्रासंगिक है–क्रोध, घृणा और असहिष्णुता के विष को बाहर फेंकना आसान है; उसे विवेक की ठंडक से थामना कठिन। शिवरात्रि समाज को आत्मावलोकन का अवसर देती है। लोकतंत्र हो या परिवार, संस्थाएँ हों या व्यक्ति–सबके लिए संतुलन आवश्यक है। अति भोग से शून्यता और अति त्याग से कटुता जन्म लेती है। शिव का मार्ग मध्य का है–जहाँ सरलता में गरिमा और मौन में शक्ति है। यह रात्रि हमें याद दिलाती है कि नेतृत्व केवल शोर नहीं, मौन की क्षमता भी है; निर्णय केवल गति नहीं, धैर्य भी है।

शिवरात्रि का जागरण सामाजिक भी है। यह जागरण हमें स्मरण कराता है कि अन्याय के विरुद्ध सजग रहना, संवेदना को जीवित रखना और सत्य के प्रति अडिग रहना ही वास्तविक भक्ति है। मंदिर की घंटी यदि बाहर बजती है, तो भीतर का प्रश्न भी बजना चाहिए–हम किस दिशा में जा रहे हैं? हमारी प्रगति किसकी कीमत पर है? आज के समय में जब पहचानें खंडित हो रही हैं और संवाद सिकुड़ रहा है, शिवरात्रि समग्रता का पाठ पढ़ाती है। यह विभाजन नहीं, समावेशन की रात्रि है। शिव का आभूषण सर्प है–भय का प्रतीक; पर वह भय नियंत्रण में है। संदेश स्पष्ट है–भय से भागिए नहीं, उसे समझिए और साधिए। तभी समाज में शांति संभव है। शिवरात्रि आत्मा की रात है–जहाँ प्रश्न, प्रार्थना में ढलते हैं; जहाँ मौन, संगीत बनता है; जहाँ अंधकार, प्रकाश का बीज बोता है। यह रात्रि हमें कहती है कि जीवन के शोर में भी एक कैलास बसता है–यदि हम सुनना सीख लें। यही शिवरात्रि का साहित्यिक, सामाजिक और मानवीय सार है–अंधकार के गर्भ से चेतना का उजास।

जागृति, शून्यता और करुणा की महासंध्या

महाशिवरात्रि पर्व पर विशेष

अमित राव पवार

युवा लेखक

महाशिवरात्रि केवल एक धार्मिक पर्व नहीं है,न ही यह मात्र परंपरा या अनुष्ठान तक सीमित कोई तिथि है। यह एक अवसर है–स्वयं को जानने का,स्वयं से मिलने का और उस असीम सत्य को अनुभव करने का,जो हर मनुष्य के भीतर मौन रूप से विद्यमान है। यह रात्रि बाहर के उत्सव से अधिक,भीतर के जागरण का निमंत्रण है। योगिक परंपरा में माना गया है कि संपूर्ण सृष्टि एक असीम रिक्तता से उत्पन्न हुई है। यह रिक्तता शून्य नहीं है,बल्कि संभावनाओं से भरा हुआ अनंत विस्तार है। वही शून्यता,वही मौन,वही विराटता शिव का स्वरूप है। शिव कोई व्यक्ति नहीं,कोई सीमित आकृति नहीं–शिव वह चेतना है,

जिसमें सब कुछ उत्पन्न होता है और अंततः विलीन हो जाता है।

शिव को संहारक कहा गया है, परंतु यह संहार भय का कारण नहीं होना चाहिए। उनका संहार विनाश नही, बल्कि परिवर्तन है। वे जो नष्ट करते हैं, वह जीवन नहीं बल्कि बंधन हैं–अज्ञान, अहंकार,सीमित पहचान और जड़ता। शिव का संहार हमें हल्का करता है,मुक्त करता है, ताकि जीवन नए रूप में खिल सके। इसी के साथ शिव को महाकरुणामयी भी कहा गया है। उनकी करुणा भावुकता नहीं,बल्कि गहन समझ से उपजी हुई है। वे किसी को दंडित नहीं करते,न ही किसी से कुछ मांगते हैं। वे केवल संभावना का द्वार खोलते हैं।

महाशिवरात्रि को 'जागृति की रात्रि' कहा गया है। इसका कारण केवल यह नहीं कि इस रात जागना शुभ माना गया है, बल्कि इसलिए कि यह रात्रि भीतर की चेतना को जागृत करने के लिए अत्यंत अनुकूल मानी जाती है। प्रकृति की गति,पृथ्वी की स्थिति और मानव ऊर्जा–तीनों इस समय एक विशेष सामंजस्य में होते हैं। यदि मनुष्य थोड़ी भी सजगता के साथ इस रात्रि को जीए, तो वह अपने भीतर गहरे स्तर पर कुछ अनुभव कर सकता है। परंतु दुर्भाग्यवश, अक्सर यह रात्रि केवल नींद से बचने की कवायद बनकर रह जाती है। लोग जागते तो हैं,पर जागरूक नहीं होते।

शिव का सबसे बड़ा उपहार मौन है। उस मौन में न कोई प्रश्न है, न उत्तर–केवल अनुभव है। जब मनुष्य उस मौन के निकट आता है, तब वह पहली बार स्वयं को बिना नाम,बिना पहचान,बिना भूमिका के देख पाता है। यही वास्तविक स्वतंत्रता है। महाशिवरात्रि एक ऐसी रात्रि है जब ग्रहण करने की क्षमता बढ़ जाती है। यह ग्रहण किसी वस्तु का नहीं,बल्कि चेतना का होता है। यदि मनुष्य इस रात थोड़ी श्रद्धा,थोड़ी सजगता और थोड़ी विनम्रता के साथ बैठ जाए,तो वह अनजाने ही अपने भीतर किसी नए द्वार को खुलता हुआ पा सकता है।

शिव किसी से दूर नहीं हैं। वे हिमालय में नहीं,केवल मंदिरों में नहीं, किसी विशेष स्थान में नहीं–वे वहीं हैं जहाँ पूर्ण स्वीकृति है। जहाँ मनुष्य स्वयं को जैसा है,वैसा स्वीकार कर लेता है, वहीं शिव की उपस्थिति स्वतः प्रकट हो जाती है। यही कारण है कि शिव को भोलेनाथ कहा गया है–वे किसी आडंबर से प्रसन्न नहीं होते,बल्कि सच्चे समर्पण से।

इस पावन रात्रि पर यही कामना है कि हम सब कम से कम एक क्षण के लिए ही सही,उस असीम विस्तार को अनुभव करें, जिसे शिव कहा गया है। वह क्षण आपके जीवन की दिशा बदल सकता है, क्योंकि एक बार जिसने चेतना का स्वाद चख लिया,वह फिर कभी पूरी तरह अचेतन नहीं रह सकता। महाशिवरात्रि को एक पर्व की तरह नहीं,बल्कि एक संभावना की तरह जिएँ। यह रात्रि केवल शरीर को जगाने की नहीं,बल्कि आत्मा को स्मरण कराने की है। यह स्मरण कि हम सीमित नहीं हैं, हम केवल देह नहीं हैं–हम वही अनंत हैं,जिसे शिव कहा गया है। यह रात्रि अंधकार की नहीं, बल्कि भीतर के प्रकाश को पहचानने की है। यह रात्रि नींद से बचने की नहीं, बल्कि स्वयं से जागने की है–पूर्ण चेतना, मौन और करुणा से भरी हुई।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

महाकाल-एक

राजशेखर व्यास

महाकाल देवता ही नहीं वैज्ञानिक तथ्य भी है !

भारतीय ज्योतिष के विद्वान यह जानते हैं कि उज्जैन का सूर्योदय काल देश भर के पंचांगों के लिए प्रामाणिक उदयकाल माना जाता रहा है। भारतीय ज्योतिषियों के अनुसार दक्षिण में लंका, भारत के मध्य में उज्जैन और (संभवतः वर्तमान) रोहतक नगरों के मध्य से जाने वाली देशांतर रेखा का सूर्योदय काल प्रामाणिक सूर्योदयकाल हैं। परिवर्तित ज्योतिष ग्रंथों में उसका नाम 'लंकोदय' काल रहा है। लंकोदय की देशांतर रेखा से पूर्व में तथा पश्चिम में स्थित स्थानों के सूर्योदय का काल ज्ञात करने की विधियाँ निर्धारित की हुई हैं। इस प्रकार उज्जयिनी का सूर्योदय काल देशभर के लिए प्रामाणिक सूर्योदय काल था और आधुनिक भाषा में उसे भारत का 'स्टैण्डर्ड टाइम' कहा जा सकता है। ईसा पूर्व के ज्योतिषी संभवतया इसी को महाकाल कहते थे। विविध शास्त्रीय तथ्यों को देव रूप मेंस्वीकार करने की हमारे यहां परम्परा रही है। इसी परम्परा के अंतर्गत महाकाल (स्टैण्डर्ड टाइम) को देव रूप में दिया गया और उसके मंदिर की स्थापना उज्जयिनी में की गयी। उज्जयिनी को क्यों चुना गया, यह भी एक ज्वलंत प्रश्न है।

भारतीय कथा-साहित्य में उज्जैन का राजा विक्रमादित्य बड़ा लोकप्रिय रहा है। उसके प्रसंग को लेकर हजारों कहानियाँ देश की विविध भाषाओं में प्रचलित हैं। उसके नवरत्नों की कथा भी सर्वविदित है, परंतु आश्चर्य की बात है कि ऐसे लोक प्रसिद्ध राजा के विषय में कथा कहानियों के अतिरिक्त कोई जानकारी नहीं मिल पायी है। विदेशी इतिहासकार उसे केवल कल्पित राजा मानते हैं। भारतीय इतिहासकारों के मनमें अवश्य उसे ऐतिहासिक महापुरुष मानने का मोह बना हुआ है। उन्होंने इसकी वास्तविकता को सिद्ध करने के लिए अनेक प्रकार के अन्वेषण अनुसंधान भी किए, फिर भी निश्चित रूप से उसके अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर पाए हैं।

विक्रम की नगरी उज्जैन में महाकाल का सुप्रसिद्ध मन्दिर है। देश के अन्य किसी भाग में महाकाल का कोई मंदिर नहीं है। अतः निश्चय ही यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यह 'महाकाल' कौन देवता हैं, जिसका केवल देशभर में एक मंदिर है। सामान्यतया महाकाल' शिव का पर्याय मान लिया गया है और उज्जैन के 'महाकाल' के मंदिर को शिव का मंदिर माना जाता है। परंतु प्रश्न यह है कि शिव के अन्य मंदिर 'महाकाल' के मंदिर क्यों नहीं कहलाते ? हमारे विचार से विक्रमादित्य, उज्जयिनी, नव-रत्न और महाकाल इन चारों शब्दों के निर्वचन से इसके वास्तविक अर्थ पर कुछ प्रकाश पड़ सकता है और सुप्रसिद्ध कथा की गुत्थी सुलझ सकती है।

भारतीय ज्योतिष के विद्वान यह जानते हैं कि उज्जैन का सूर्योदय काल देश भर के पंचांगों के लिए प्रामाणिक उदयकाल माना जाता रहा है। भारतीय ज्योतिषियों के अनुसार दक्षिण में लंका, भारत के मध्य में उज्जैन और (संभवतः वर्तमान) रोहतक नगरों के मध्य से जाने वाली देशांतर रेखा का सूर्योदय काल प्रामाणिक सूर्योदयकाल हैं। परिवर्तित ज्योतिष ग्रंथों में उसका नाम 'लंकोदय' काल रहा है। लंकोदय की देशांतर रेखा से पूर्व में तथा पश्चिम में स्थित स्थानों के सूर्योदय का काल ज्ञात करने की विधियाँ निर्धारित की हुई हैं। इस प्रकार उज्जयिनी का सूर्योदय काल देशभर के लिए प्रामाणिक सूर्योदय काल था और आधुनिक भाषा में उसे भारत का 'स्टैण्डर्ड टाइम' कहा जा सकता है। ईसा पूर्व के ज्योतिषी संभवतया इसी को महाकाल कहते थे। विविध शास्त्रीय तथ्यों को देव रूप मेंस्वीकार करने की हमारे यहां परम्परा रही है। इसी परम्परा के अंतर्गत महाकाल (स्टैण्डर्ड टाइम) को देव रूप में दिया गया और उसके मंदिर की स्थापना उज्जयिनी में की गयी। उज्जयिनी को क्यों चुना गया, यह भी एक ज्वलंत प्रश्न है। जब एक ही देशांतर रेखा देश के इतने लंबे-चौड़े भाग से निकलती है, तो उज्जैन ही को क्यों महत्त्व दिया जाए, उत्तर यह है कि उज्जैन कर्क रेखा पर स्थित है, जहां तक उत्तरायण सूर्य आता है और पुनः लौटकर मकर रेखा तक दक्षिणगामी होता है। कर्क रेखा पर स्थित होने के कारण भारतीय ज्योतिर्विदों ने उज्जयिनी को महाकाल की नगरी माना।

विक्रमादित्य शब्द में दो खंड हैं विक्रम-आदित्य। आजकल विक्रम का अर्थ सामान्यतया 'पराक्रम' समझा जाता है ओर आदित्य का 'सूर्य'। इस प्रकार विक्रमादित्य का अर्थ शक्ति का सूर्य किया जाता है। परंतु विक्रम शब्द में क्रम धातु है, जिसका अर्थ है चलना। इसी से बना हुआ दूसरा शब्द 'संक्रम' है, जो सूर्य की गति के विषय में सर्वविदित है।

सूर्य का संक्रम, संक्रमण और संस्कृति आधुनिक ज्योतिषियों के लिए अपरिचित शब्द नहीं है। उज्जैन की व्युत्पत्ति इस समय उज्जयिनी में मानी जाती है। उज्जैन के प्राकृत नाम 'उज्जैणी' या 'उज्जैन नगरी' ; थे, जो स्पष्टतः संस्कृत 'उदयिनी' एवं 'उदयन नगरी' से व्युत्पन्न प्रतीत होते हैं। पुनः संस्कृतिकरण की यह प्रक्रिया 'कथा सरित्सागर' आदि में बहुत अधिक पायी जाती है। उज्जैन वास्तव में विक्रमादित्य के उदय की नगरी थी। भारतीय कथा साहित्य का सुप्रसिद्ध उदयन भी सूर्य का ही अन्य नाम है, जिसका विवेचन आगे किया जायेगा।

इस प्रकार विक्रमादित्य महाकाल तथा उज्जयिनी की व्युत्पत्ति पर विचार करने से यही ज्ञात होता है कि विक्रमादित्य नाम का वास्तविक राजा नहीं था। वह दक्षिणगामी सूर्य का ही कल्पित नाम है और उसे राजा का स्वरूप दे दिया गया है। उसे राजा मानने पर उसकी राजधानी उयिनी अथवा उजैणी (बाद में उज्जयिनी) कल्पित की गयी और उसी नगरी का समय संपूर्ण देश के लिए प्रमाणिक समय होने के कारण ' महाकाल' कहलाया। इतने विवेचन के बाद नवरत्नों की कल्पना भी स्पष्ट हो जाती है जो निःसंदेह नव ग्रह हैं।

एक नियम स्थान तक आगे बढ़कर वापस मूल स्थान तक पहुंचना सिंह विक्रांत कहलाता है। सिंह का स्वभाव शिकार करने के लिए कुछ दूर तक वन में आगे बढ़कर पुनः लौटने की क्रिया के लिये 'सिंह विक्रांत' या 'सिंह विक्रमण' शब्द प्रसिद्ध हुआ। कर्क राशि तक उत्तर दिशा में चलकर पुनः

दक्षिण की ओर विक्रमण करने वाला सूर्य 'सिंह विक्रमी' हुआ। यही 'राशि' व्युत्पत्ति है। सूर्य 31 दिन तक कर्क राशि पर रहकर 32 वें दिन सिंह राशि पर पहुंचता है। यही सिंहासन बत्तीसी का रहस्य है। सूर्य सिंह राशि का स्वामी माना जाता है। कर्क तक आगे बढ़कर वह वापस लौटता है और अपने घर की राशि तक आकर वहां आसीन होता है। सूर्य की उत्तर दक्षिण यात्राएं नीचे स्पष्ट की जा रही हैं:-

सिंह के बाद सूर्य कन्या राशि में प्रवेश करता है (संभवतः प्राचीन भारतीय राशि विभाजन खगोल का नहीं भूमंडल का था। भूमि के जिस भाग पर सूर्य राशियाँ सीधी पड़ती थीं, वही राशि विशेष खंड का था। 'राशि' शुद्ध संभवतः 'रश्मि' के प्राकृत रूप रस्सियां, 'रश्शि' का पुनः संस्कृत रूप है। सतरंगी किरणों के कारण 'सप्ताश्व' सूर्य का रूपक भी इस 'रश्मि' शब्द से स्पष्ट होता है।)

उत्तर भारत के ईसा पूर्व कालीन आर्यों की दृष्टि से वह प्रदेश कुमारी कन्याओं का प्रदेश था। भारत का यह दक्षिण भू-भाग (अर्थात् 16 अक्षांश से 8 अक्षांश का भू-भाग) कुमारी कन्याओं का प्रदेश माना जाता था। उस प्रदेश पर सीधी किरणें फेंकने वाला सूर्य कन्यार्क कहलाता था। कन्याओं के उस देश की स्मृति के रूप में आज भी कुमारी अन्नीप का दर्शनीय कन्याकुमारी का मन्दिर जगत् प्रसिद्ध है।

वहां से दक्षिण की ओर बढ़ता हुआ सूर्य जब विषुवत् रेखा पर पहुंच जाता है और वहां उसकी किरणें सीधी पड़ती हैं, वह तुला राशि पर पहुंचा हुआ माना जाता है। 'तुला' नाम बहुत सार्थक है। विषुवत् रेखा पर जब सूर्य पहुंच जाता है और तो भूमंडल का उत्तर और दक्षिण का भाग बिल्कुल बराबर तुला हुआ होता है। यही तुला शब्द की सार्थकता है, उसके बाद आगे बढ़कर सूर्य जब वृश्चिक राशि पर पहुंचता है, तो उज्जयिनी पर पड़ने वाली सूर्य की किरणें उतनी ही वक्र होती हैं, जितना बिच्छू का डंक होता है। उससे आगे बढ़ने पर उज्जैन पर पड़ने वाली किरणें और भी अधिक वक्र हो जाती हैं और धनुष के समान दिखायी पड़ती हैं। यह 'धनु' का अर्थ है। उसके बाद समुद्र के मध्यगत मकर राशि तक पहुंचकर सूर्य का पुनः उत्तरायण प्रारंभ होता है। मकर का स्वभाव अगाध जल में पहुंचकर पुनः स्थल की और लौटने का है, यही 'मकर' राशि की सार्थकता है। वहां से संक्रमण करता हुआ सूर्व सर्वप्रथम जिस स्थल भाग के निकट आता है, वह स्थल भाग किसी समय सम्भवतः घड़े को घोण जैसा था और इसलिए 'कुम्भघोण' नाम से प्रसिद्ध है, जहां का स्थल भाग घड़े के घोण जैसा है। कुम्भ राशि का 'कुम्भघोण' संभवतः कोई द्वीप था, जो अगाध समुद्र में लुप्त हो गया है।

उससे उत्तर में बढ़ने पर अगाध समुद्र है, जिसमें प्राणी के नाम पर केवल मीनों का निवास है। अतः वह मीन राशि का प्रदेश कहलाया। वहां से आगे संक्रमण करके सूर्य लंकोदय की प्रसिद्ध नगरी लंका तक पहुंचता है और उससे वह 'वृशस्थ' कहलाया। वहीं भारतीय कथाओं में 'वत्सराज (वृष) उदय' नाम से चित्रित हुआ है। वत्सराज ने नागवन में अपनी प्रेयसी को प्राप्त किया था। यह नागवन वर्तमान मैसूर के पास का प्रदेश है, जहां के वनों में हाथियों की बहुलता है। यही सूर्य मिथुन राशि का स्वामी बनता है। उदय के नागवन में पत्नी से मिलन (मिथुन) की कथा सूर्य के मिथुन राशि पर आने की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। मिथुन के बाद सूर्य उदयिनी पति बन जाता है और अपनी प्रेयसी के नगर उज्यियिनी पहुचं कर 'कर्कस्थ' होता है। कर्क का स्वभाव स्थल से जल की ओर जाने का होने के कारण वह वापस जल की ओर दक्षिणगामी होता है। सूर्य के अयन से संबंधित ज्योतिष शास्त्र की यह घटना भारतीय साहित्य में एक रोचक कथा का रूप धारण कर चुकी थी और वृद्धजनों के मुख से यत्र-तत्र सुनी जाती थी, जिसका संकेत कालिदास ने किया है:-

'प्राप्यावन्तीमुदुयन' कथा को विदग्रामवृान; विदेशी दूत मेगस्थनीज ने भी सूर्य की इस कथा का श्रवण भारत के वृद्ध नागरिकों से किया था और उसका वर्णन उद्धरण इस प्रकार है :- 'हरकुले (स) सौरसेन लोगों का इष्टदेव है। उसके दो प्रसिद्ध नगर हैं, एक मथुरा और दूसरा क्लिसबुरा जिसके पास ऐबोन्नी नदी बहती है। हरकुले (स) की पुत्री पांड्या का राज्य दक्षिण में पाण्ड्य प्रदेश में है। हरकुले दायोनीस (स) से 15 पीढ़ी बाद हुआ। शिव (शिवी) लोग अपने को हरकुल का वंशज मानते हैं। 'एज ऑफ नन्दाज एण्ड मौर्याज' ग्रंथ के पृष्ठ 101 पर श्री नीलकण्ठ शास्त्री ने इस उदाहरण की व्याख्या करने की कोशिश की है और मदुरा को मथुरा तथा ऐबोत्री को 'यमुना' माना है। यह व्याख्या भ्रामक है। (क्रमशः)

महाशिवरात्रि विशेष

आरबी त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

काशी विश्वनाथ से महाकाल : श्रद्धालुजन का उमड़ता सैलाब

महा शिवरात्रि पर्व और शिव नवरात्र के कुछ दिन पूर्व काशी में बाबा विश्वनाथ तथा उज्जैन में महाकालेश्वर प्रभु के दर्शन, पूजा- अर्चना का दुर्लभ संयोग बना। सप्त पवित्र और मोक्षदायी प्राचीन नगरियों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त विश्वनाथ की काशी तथा महाकाल की नगरी उज्जैन में दूर- दूर से आये श्रद्धालुजन की भारी भीड़ दर्शन के लिये आतुर लाइनों में लगी हुई थी। प्रभु की एक झलक पाने को लोग इतने व्याकुल और उतावले दिखाई देते हैं कि यह अवसर अवर्णनीय हो जाता है। दोनों जगह विशाल कॉरीडोर के निर्माण से सुविधापूर्ण दर्शन सुलभ होते जा रहे हैं तथापि अनेक श्रद्धालुओं को सही जानकारी के लिये इधर-उधर भटकते देखा जा सकता है। उज्जैन का महाकाल लोक इतना विशाल स्वरूप का बन जाने पर भी अनेक जगह चेकिंग से गुजरकर ही एक पल के लिये दर्शन हो पाते हैं।

महा शिवरात्रि के कुछ दिन पहले हम काशी विश्वनाथ के दर्शन को छोटे- छोटे रास्ते और गलियों से गुजरकर विश्वनाथ धाम परिसर पहुंचते हैं। दर्शन के लिये ' सुलभ दर्शन ' की आनलाईन बुकिंग की गई हो परिसर काउंटर से शुल्क देकर अंदर जायें आपको अनेक तरह की पुलिस चेकिंग से गुजरकर, धक्का-मुक्की झेलते हुए आखिर विश्वनाथ की एक झलक मिल जाती है। जब आप विश्वनाथ के समक्ष होते हैं तब पुलिस कर्मी धकियाते हुए वहां से हटाते हैं। सो, आपके धैर्य की परीक्षा का समय यही होता है। इसके बावजूद श्रद्धालुओं के उत्साह में कोई कमी नहीं दिखती।

हम, श्री शिवाय नमस्तुभ्यं, रुद्राष्टक और ओम नमः शिवाय का जाप करते हुए लाइन में चलते जाते हैं। अनेक जगह सुलभ दर्शन की पर्ची दिखानी होती है। हम शुद्ध हृदय से यह यात्रा निर्विघ्न हो यह संकल्प लेकर चले थे लेकिन इसे आलोचना ना समझा जाये तो कुछ लोग इन पवित्र स्थानों पर भी श्रद्धालुओं के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते बल्कि निर्विघ्न दर्शन में खलल डालते नजर आते हैं।

यह यात्रा ऐसे समय की गई जब पवित्र स्थानों पर भी बेवजह विवाह खड़े किये जा रहे थे। सबसे पहले बात काशी की तो जब नई दिल्ली के राजपथ पर देवी अहिल्याबाई पर केन्द्रित झांकी प्रदर्शित की जा रही थी इसके कुछ दिन पहले वाराणसी के प्रसिद्ध मणिकर्णिका घाट पर अहिल्याबाई की प्रतिमा को कथित रूप से तोड़े जाने और लोगों की आस्था को चोट पहुंचाने की कोशिश की गई थी। वहां कुछ और विकास कार्य होने जा रहे हैं जो अच्छी बात है। उत्सुकता वश हम भी मणिकर्णिका घाट

छोटी गलियों से होकर पहुंचते हैं। यह जगह अंतिम संस्कार और मोक्ष प्राप्ति के लिये जानी जाती है। रास्ते में उन्हीं गलियों में शव यात्रा मिलती है जो यहां का रोजाना का क्रम है। आसपास रहने वाले बताते हैं कि अब उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता वे आदी हो चुके हैं। छू जाने पर भी वे गंगाजल से शुद्धिकरण कर लेते हैं और विचलित नहीं होते। यह जीवन का परम सत्य है। यहां बीएचयू में हॉस्टल के छात्रों का आंदोलन चल रहा था तो काशी का विप्र समाज मनोज वाजपेयी की फिल्म ' घूसखोर पंडत ' के खिलाफ आंदोलन कर रहे थे। कुछ समय पूर्व शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद प्रयागराज में संगम पर स्नान को जाने से रोकने पर 11 दिन तक वहीं डटे रहे तथा बाद में काशी पहुंचकर मीडिया से चर्चा में उन्होंने अपनी बातें रखी। खैर यह एक अलग विषय है जिस पर सियासत नहीं होना चाहिये थी।

काशी में भी बिचौलिये शीघ्र दर्शन का झांसा देकर लोगों को परेशान करते हैं।मंदिर परिसर में मोबाइल, पर्स और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामान ले जाने पर प्रतिबंध को देखते हुए लॉकर की अनेक दुकानें सजी हैं जो अच्छा खासा शुल्क वसूलकर यह काम कर रहे हैं। पूजा सामग्री, तस्वीरों की कई दुकानें हैं जो श्रद्धालुओं के पीछे पड़ जाते हैं। कॉरीडोर में मां अन्नपूर्णा, शिव पार्वती का मंदिर भी है। यहां समीप ही काल भैरव मंदिर भी दर्शन के लिये तांता लगा रहता है।अन्य प्रसिद्ध स्थलों में अस्सी घाट पर गंगा आरती और स्नान राजा हरिश्चंद्र घाट समेत गंगा स्नान के लिये अन्य घाट भी हैं।

बात बनारस की हो और बनारसी पान का लुत्फ ना उठाया जाये तो यात्रा अधूरी मानी जायेगी। यहां का गौदोलिया मार्केट बनारसी साड़ियों के लिये जाना जाता है।साड़ी विक्रेता भवनानी बताते हैं कि कॉरीडोर बन जाने के बाद से लोगों की आवा-जाही काशी में बढ़ी है। काशी बहुत बदल गया है और अब रोप- वे बनने जा रहा है। कॉरीडोर निर्माण में एक सौ से अधिक मकान टूटे यह एक अलग व्यथा है लेकिन यह सही है कि होटल हास्पिटैलिटी, परिवहन तथा बाजारों में रौनक आने से कारोबार भी बड़ा है। सहायक रोजगार धंधे बड़े हैं।

काशी आयें तो यहां की मशहूर चाय की दुकान लक्ष्मी चाय, कचौरी गली स्थित सोनू चौरसिया की पुश्तैनी कचौरी की दुकान की बगैर प्याज लहसुन वाली कचौरी खाने को किसी का भी मन ललचा जाता है। यह तीसरी पीढ़ी की दुकान है। बनारसी पान की दुकान मुख्य सड़कों से लेकर गलियों में भी मिल जाती है। सो, अमिताभ बच्चन अभिनीत डॉन मूवी का गाना 'खइके पान बनारस वाला' बरबस याद आ जाता है। 'हमारा नाम बनारसी बाबू' जैसे अनेक गाने अपने समय में लोगों की जुबान पर रहे। गंगा को लेकर गानों- भजनों की पूरी श्रंखला है लेकिन भूपेन हजारिका का गाया गाना इतिहास में दर्ज है।

काशी विश्वनाथ मंदिर से सम्बद्ध न्यास से कोई जानकारी हासिल करना नामुमकिन सी है। सुलभ दर्शन वालों को प्रसाद जरूर न्यास भवन से मिल जाती है। बाजारवाद और व्यवसायिक नजरिया पवित्र तीर्थों पर भी हावी हो गया है। दूसरी ओर भीड़भाड़, धूल और शोरगुल तथा प्रदूषण काशी समेत उज्जैन सहित अन्य पवित्र स्थलों पर आम बात है। इन सबके बावजूद बाबा विश्वनाथ और महाकालेश्वर प्रभु के दर्शन कर स्वयं को कृतार्थ समझियेगा।

शिवरात्रि विशेष

अरविंद श्रीधर

(निदेशक,माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल)

महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग : लोक आस्था का अनूठा पर्व 'शिव नवरात्रि'

पुराणोक्त मत कुछ भी हो,बाबा महाकाल की नगरी उज्जैन में तो यह पर्व शिव-पार्वती विवाहोत्सव के रूप में ही मनाए जाने की परंपरा है। महाकाल मंदिर में मनाया जाने वाला शिव नवरात्रि पर्व इस तीर्थ नगरी की उत्सवप्रियता का अद्भुत उदाहरण है। अन्य किसी शैव तीर्थ में शिव नवरात्रि मनाए जाने की परंपरा प्राय: देखने में नहीं आती। उज्जैन में शिव नवरात्रि की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। इसकी पुष्टि उज्जैन के उद्भट विद्वान पं. सूर्य नारायण व्यास के एक लेख से होती है,जो सनातन धर्म की प्रमुख पत्रिका 'कल्याण' के आठवें वर्ष (1934) के विशेषांक में प्रकाशित हुआ था। नवरात्रि उत्सव की और इंगित करते हुए वह लिखते हैं- 'महाशिवरात्रि के नौ रोज पूर्व ही मंदिर के ऊपर के आंगन में नौ रोज हरि कीर्तन होता है।'

शिवरात्रि सनातन परंपरा का एक महत्वपूर्ण पर्व है। विभिन्न पुराणों एवं शैव परंपरा के ग्रंथों के अनुसार महाशिवरात्रि महादेव शिव के लिंग स्वरूप में प्राकट्य का दिन है,तो लोकआस्था के अनुसार इस दिन शिव-पार्वती का विवाह संपन्न हुआ था।

शिव और भगवती सती के विवाह के संबंध में शिव पुराण की रूद्र संहिता के सती खंड (अध्याय 18, श्लोक संख्या 20 एवं अध्याय 20,श्लोक संख्या 38) में उल्लेख है- चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी,रविवार को पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में भगवान महेश्वर ने विवाह के लिए यात्रा तथा विवाह कार्य संपन्न किया। शिव-पार्वती विवाह के संबंध में शिवपुराण के ही पार्वती खंड (अध्याय 35 श्लोक संख्या 58 से 60) में स्पष्ट उल्लेख है-

वशिष्ठ जी हिमालय को कहते हैं कि- 'एक सप्ताह बीतने पर एक दुर्लभ उत्तम सुयोग आ रहा है। उस लग्न में लग्न का स्वामी स्वयं अपने घर में स्थित है, और चंद्रमा भी अपने पुत्र बुद्ध के साथ स्थित रहेगा। चंद्रमा रोहिणी युक्त होगा, इसलिए चंद्र तथा तारागणों का योग भी उत्तम है। मार्गशीर्ष का महीना है, उसमें भी सर्वदोषविवर्जित चंद्रवार का दिन है। वह लग्न सभी उत्तम ग्रहों से युक्त तथा नीच ग्रहों की दृष्टि से रहित है।उस शुभ लग्न में बृहस्पति उत्तम संतान तथा पति का सौभाग्य प्रदान करने वाले हैं।

हे पर्वत! ऐसे शुभ लग्न में अपनी कन्या मूल प्रकृतिरूपा ईश्वरी जगदंबा को,जगत्पिता शिव जी के लिए प्रदान करके आप कृतार्थ हो जाएंगे। '

उक्त दोनों उद्धरणों से स्पष्ट है कि शिव-पार्वती विवाह महाशिवरात्रि पर नहीं हुआ था,क्योंकि महाशिवरात्रि तो फाल्गुन मास में आती है। महाशिवरात्रि पर्व का माहात्म्य प्रतिपादित करते हुए शिव पुराण की ही विश्वेश्वर संहिता में कहा गया है - महाशिवरात्रि के दिन देवाधिदेव महादेव ने सर्वप्रथम ब्रह्मा और विष्णु जी को लिंग स्वरूप का दर्शन कराया था। महाशिवरात्रि के दिन ही शिव निराकार से साकार हुए थे। ईशान संहिता में शिवरात्रि के संबंध में कहा गया है- फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यामादिदेवो महानिशि।

शिवलिङ्गतयोद्भूतः कोटि सूर्य समप्रभः।।

फाल्गुन मास की कृष्ण चतुर्दशी की महानिशा में आदिदेव महादेव कोटि सूर्य के समान दीप्तिसंपन्न हो शिवलिंग के रूप में आविर्भूत हुए थे। अन्य शैव ग्रंथ भी इसी मत की पुष्टि करते हैं।

पुराणोक्त मत कुछ भी हो,बाबा महाकाल की नगरी उज्जैन में तो यह पर्व शिव-पार्वती विवाहोत्सव के रूप में ही मनाए जाने की परंपरा है। महाकाल मंदिर में मनाया जाने वाला शिव नवरात्रि पर्व इस तीर्थ नगरी की उत्सवप्रियता का अद्भुत उदाहरण है। अन्य किसी शैव तीर्थ में शिव नवरात्रि मनाए जाने की परंपरा प्रायः देखने में नहीं आती।

उज्जैन में शिव नवरात्रि की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। इसकी पुष्टि उज्जैन के उद्भट विद्वान पं. सूर्य नारायण व्यास के एक लेख से होती है,जो सनातन धर्म की प्रमुख पत्रिका 'कल्याण' के आठवें वर्ष (1934) के विशेषांक में प्रकाशित हुआ था। नवरात्रि उत्सव की और इंगित करते हुए वह लिखते हैं- 'महाशिवरात्रि के नौ रोज पूर्व ही मंदिर के ऊपर के आंगन में नौ रोज हरि कीर्तन होता है।'

नई पीढ़ी में पौराणिक साहित्य के गहन अध्येता डॉ. विवेक चौरसिया भी शिवरात्रि को शिव-पार्वती परिणयोत्सव ही मानते हैं। लोकमान्यता प्रमाण में नहीं आस्था में आश्रय खोजती है; और बाबा महाकाल को राजाधिराज मानने वाली अवंतिका नगरी परंपरागत रूप से शिवरात्रि को शिव-पार्वती परिणयोत्सव के रूप में ही मनाती आ रही है।

इस लोक आस्था के चलते यह आश्चर्य की बात नहीं है कि महाकाल मंदिर में शिव नवरात्रि के दौरान पूजा-पाठ और रीति-रिवाजों का वैसा ही पालन किया जाता है,जैसा सनातन धर्म के अनुसार विवाहोत्सव में प्रचलित है। इन नौ दिनों में महाकाल का श्रृंगार दूल्हा मानकर ही किया जाता है। सामान्यतः शिवपूजन में हल्दी का निषेध है,लेकिन दूल्हे को बगैर हल्दी चढ़ाए विवाह कैसे हो सकता है? इसलिए इन नौं दिनों में महाकाल को हल्दी,चंदन और केसर का उबटन लगाया जाता है। सुगंधित द्रव्यों एवं औषधियों से स्नान कराया जाता है। नवीन वस्त्र आभूषण धारण कराए जाते हैं। गर्भ ग्रह में विशेष पूजन किया जाता है और प्रतिदिन नए-नए स्वरूपों में श्रृंगार किया जाता है।

शिव नवरात्रि का प्रारंभ नैवेद्य कक्ष में भगवान चंद्रमौलेश्वर और कोटितीर्थ कुंड के समीप कोटेश्वर महादेव की पूजन और संकल्प के साथ से होता है। इसके पश्चात महाकाल का क्रमशः शेषनाग,घटाटोप, छबीना, होलकर स्वरूप, मनमहेश,उमा-महेश एवं शिव तांडव स्वरूप में श्रृंगार किया जाता है।

इन नौ दिनों में देवाधिदेव महादेव भगवान महाकाल हरि कथा का श्रवण भी करते हैं, जिसका उल्लेख पं. सूर्यनारायण व्यास ने 1938 के एक लेख में किया है। नारदीय संकीर्तन शैली में महाकाल को हरि कथा सुनाने की यह परंपरा एक शताब्दी से अधिक प्राचीन है। महाशिवरात्रि के दिन अर्धरात्रि में महानिशाकाल की विशेष पूजा होती है। दूसरे दिन प्रातः महाकाल को सप्तधान मुघौटा धारण कराया जाता है। नवीन वस्त्र आभूषणों के साथ उनका दूल्हे जैसा श्रृंगार किया जाता है,और उनके शीश पर फूलों एवं फलों का आकर्षक सेहरा सजाया जाता है।

भक्तों को महाकाल के सेहरा दर्शन का सौभाग्य वर्ष में केवल एक बार शिवरात्रि के दिन ही मिलता है। शिवरात्रि के साथ एक विशिष्ट प्रसंग और भी जुड़ा हुआ है। इस दिन महाकाल की भस्म आरती प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में न होकर,दोपहर 12:00 बजे की जाती है। और अब तो शिव-पार्वती विवाह के उपलक्ष में पुजारी परिवार और मंदिर समिति की ओर से प्रीतिभोज का आयोजन भी किया जाने लगा है।

प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में होने वाली भस्म आरती और शिवनवरात्रि का पर्व,12 ज्योतिर्लिंगों में से सिर्फ महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग की ही परंपरा है। इन अनूठी परंपराओं के चलते यह शैवतीर्थ सनातन धर्मावलंबियों की आस्था और श्रद्धा का केंद्र बन गया है।

महाशिवरात्रि पर्व पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

देवास। महाशिवरात्रि के शुभ अवसर पर मानस भवन शिव मंदिर बीएनपी गेट राधागंज रोड़ पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर महाशिवरात्रि पर्व बड़े उत्साह एवं श्रद्धापूर्वक मनाया जायेगा। मानस भवन शिव मंदिर समिति के न्यासी विक्रमसिंह चौधरी ने बताया कि शिवजी का स्थान हिन्दु धर्म में बहुत ऊंचा है और एक दृष्टि से सर्वोपरि है । एक शिव जी ही ऐसे देवता बतलाये गये है जो संपत्ति और वैभव के बजाए त्याग और अकिंचनता को वरण करते है। उन्होंने अमृत को त्याग कर गरल को पिया, हाथी तथा घोडे को छोड़कर बैल की सवारी स्वीकार की और हीरा, मोती, रत्नों को त्याग कर सर्प और नरमुण्डों के आभूषण अपनाये। इस प्रकार महाशिवरात्रि का पर्व हमकों लोभ, मोह, लालसा के स्थान पर त्याग, अपरिग्रह और परहित साधना की प्रेरणा व उपदेश देता है। महाशिवरात्रि के इस पावन पर्व के अवसर पर 15 फरवरी को प्रातरू 05 बजे से देवाधिदेव भगवान सिद्धेश्वर महादेव का पं. गजेन्द्र शास्त्री के आचार्यत्व में रूद्राभिषेक किया जायेगा । प्रातरू 11 बजे से गायत्री शक्तिपीठ की देवकन्याओं द्वारा संगीतमय भजनों की प्रस्तुति दी जायेगी तत्पश्चात दोपहर 12 बजे महामंगल, महाआरती, महाप्रसाद का वितरण किया जायेगा।

गायत्री शक्तिपीठ एवं गायत्री प्रज्ञापीठ पर महाशिवरात्रि पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन

देवास। गायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर एवं गायत्री प्रज्ञापीठ विजय नगर पर महाशिवरात्रि का पर्व श्रद्धा एवं उत्साह पूर्वक मनाया जाएगा। गायत्री शक्तिपीठ के मीडिया प्रभारी विक्रमसिंह चौधरी ने बताया कि महाशिवरात्रि जागरण, साधना, भजन करने की रात्रि है। महाशिवरात्रि का जागरण अपने आप में बड़ा महत्वपूर्ण है। इस रात्रि में जागरण, व्रत एवं साधना करने से पाप का क्षरण होता है एवं पुण्य की प्राप्ति होती है तथा भक्ति व मुक्ति दोनों ही प्राप्त होती है। महाशिवरात्रि के इस पावन पर्व के अवसर पर 15 फरवरी को प्रात 07 बजे से भगवान प्रज्ञेश्वर महादेव का रूद्राभिषेक किया जाएगा। प्रात 08.30 बजे से श्री वेदमाता गायत्री, परम पूज्य गुरूदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, वंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा एवं देवोव्हान के साथ पंचकुण्डीय गायत्री महायज्ञ होगा साथ ही दीक्षा, यज्ञोपवित, विद्यारंभ सहित विभिन्न संस्कार होंगे। प्रात 11 बजे गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहूति, आरती एवं प्रसाद का वितरण किया जाएंगा होगा। इसी प्रकार गायत्री प्रज्ञापीठ विजय नगर पर भी प्रज्ञापीठ की संरक्षिका दुर्गा दीदी के सानिध्य में प्रात 08 बजे से अभिषेक, संगीतमय भजन कीर्तन होंगे एवं प्रसाद का वितरण होगा। गायत्री शक्तिपीठ के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी महेश पण्डया एवं गायत्री प्रज्ञापीठ के मुख्य प्रबंध ट्रस्टी राजेन्द्र पोरवाल ने समस्त भावनाशील परिजनों से अनुरोध किया है कि इस आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्मिलित होकर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

विंध्याचल अकादमी ने किया यातायात जागरूकता अभियान का आयोजन

नियमों का पालन करने वालों को गुलाब भेंट कर किया अभिनंदन

देवास। सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को साकार करते हुए शहर के प्रतिष्ठित विद्यालय विंध्याचल अकादमी द्वारा 14 फरवरी 2026 को यातायात जागरूकता अभियान का प्रभावी आयोजन किया गया। इस अभियान में विद्यार्थियों ने उत्साह एवं अनुशासन के साथ सहभागिता की। पुलिस अधीक्षक की अनुशंसा पर कार्यक्रम का संचालन मध्य प्रदेश पुलिस के यातायात विभाग के मार्गदर्शन में किया गया। विद्यार्थियों ने शहर के विभिन्न यातायात सिग्नलों पर नागरिकों को हेलमेट पहनने, सीट बेल्ट लगाने, सिग्नल का पालन करने तथा सुरक्षित एवं जिम्मेदार वाहन संचालन के प्रति जागरूक किया। अभियान की विशेष पहल यह रही कि जो वाहन चालक यातायात नियमों का पूर्ण पालन करते पाए गए, उन्हें विद्यार्थियों द्वारा गुलाब का फूल भेंट कर अभिनंदन किया गया। इस सकारात्मक प्रोत्साहन से नागरिकों में विशेष उत्साह देखा गया और उन्होंने नियमों का निरंतर पालन करने का संकल्प भी लिया। विद्यालय के शिक्षकों पूनम महाजन, अजय आंधले, आलोक पांडे की उपस्थिति में विद्यार्थियों ने हाथों में संदेश पट्टिकाएँ लेकर सड़क सुरक्षा का संदेश दिया। अनेक नागरिकों ने इस अनूठी पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे अभियान समाज में अनुशासन एवं जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विद्यालय प्रशासन ने बताते हुए हर्ष व्यक्त किया कि इस प्रकार के कार्यक्रम विद्यार्थियों में सामाजिक चेतना एवं नागरिक कर्तव्य की भावना विकसित करते हैं तथा शहर में सड़क सुरक्षा के प्रति सकारात्मक वातावरण निर्मित करते हैं। यह अभियान शहर में यातायात नियमों के पालन को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक प्रेरणादायक और सराहनीय प्रयास सिद्ध हुआ।

गांवों - शहरों के चहुंमुखी विकास और जन - जन की समृद्धि के लिए काम कर रही है केंद्र, मध्यप्रदेश सरकार : हेमंत खंडेलवाल

बैतूल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल के प्रयासों से मुख्यमंत्री विशेष विधि से स्वीकृत 3 करोड़ 59 लाख रुपए की लागत से स्वीकृत हुए 24 निर्माण कार्यों का भूमिपूजन 14 फरवरी को श्री खंडेलवाल ने केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके के साथ किया। बैतूल विधानसभा क्षेत्र के बारहवीं ,खंडारा एवं खेड़ी सांवलीगढ़ ग्रामों में आयोजित भूमिपूजन कार्यक्रमों को संबोधित करते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि 1947 में देश आजाद हुआ था, तब से यदि विकास होता तो हम दुनिया में अव्वल होते ।जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी तो विकास ने रफ्तार पकड़ी अब हर क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहा है ।उन्होंने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की मध्य प्रदेश सरकार द्वारा गांव और शहरों के चहुंमुखी विकास के के साथ ही जन-जन की समृद्धि के लिए जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से सतत काम किया जा रहा है ।भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बैतूल विधायक श्री खंडेलवाल ने कहा कि बैतूल विधानसभा क्षेत्र के प्रत्येक ग्राम में वहां के निवासियों की आवश्यकताओं के मुताबिक हर मूलभूत सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है ,जिससे रहवासियों का जीवन आसान बन सके ।हमारा प्रयास प्रत्येक ग्राम को आदर्श ग्राम बनाना है।

विकास के क्षेत्र में हो रहा अभूतपूर्व काम : डी डी उईके- बैतूल विधानसभा क्षेत्र के खंडारा ग्राम में निर्माण कार्यों के भूमिपूजन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने 11 वर्षों में विकास सहित हर क्षेत्र में अभूतपूर्व काम किया है ।पूर्व सांसद स्वर्गीय विजय कुमार खंडेलवाल का जिक्र करते हुए केंद्रीय राज्य मंत्री श्री उईके ने कहा कि बाबूजी ने बैतूल जिले में विकास की नई इबारत लिखी थी। अब भाजपा प्रदेश अध्यक्ष, बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल बैतूल विधानसभा ही नहीं बल्कि समूचे बैतूल जिले के विकास के लिए जुटे हुए हैं ।उन्होंने कहा कि केंद्र और मध्यप्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का जमीनी स्तर तक क्रियान्वयन होने से आज शहरों से लेकर गांव - गांव तक समग्र विकास नजर आ रहा है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने शनिवार को बैतूल विधानसभा क्षेत्र के बारहवीं, खंडारा, खेड़ी सांवलीगढ़ ग्रामों में मुख्यमंत्री विशेष निधि से 3 करोड़ 59 लाख रुपए की लागत से स्वीकृत 24 निर्माण कार्यों का भूमिपूजन किया। जिसमें 3 करोड़ 8 लाख रुपए की लागत से बारहवीं, सोहागपुर, सेलगांव, नाहिया, बघौली गोरखार, दीवान चारसी, नीमझिरी,कन्नड़गांव, भैंसदेही, खेड़ली, लाखापुर, बघवाड़ ,बडोरा, पीपला, गोनीघाट, मंडई खुर्द, लापाझिरी, महदगांव, जामठी ग्रामों में सर्वसुविधायुक्त सामुदायिक भवनों का निर्माण किया जाएगा ।साथ ही सोहागपुर में सपना नहर के पास 16 लाख रुपए की लागत से ब्रिज, खंडारा में 15 लाख रुपए की लागत से मोक्षधाम घाट, खेड़ी सावलीगढ़ में चिंतामन बाबा के पास 10 लाख रुपए से शेड ,घाट तथा कुम्हली ग्राम के हाट बाजार में 10 लाख रुपए की लागत से सीसी पुलिया और चौपाल का निर्माण होगा।

सामाजिक समरसता के साथ बढ़ेगी रोजगार गतिविधियां- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक गतिविधियों, धार्मिक- सांस्कृतिक आयोजनों के लिए पर्याप्त स्थान नहीं होने से ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ता था ।इसलिए चरणबद्ध तरीके से बैतूल विधानसभा की प्रत्येक ग्राम पंचायत एवं बड़े ग्राम में सर्व सुविधायुक्त सामुदायिक भवनों का निर्माण करवाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सामुदायिक भवनों के निर्माण होने से सामाजिक, धार्मिक,सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन सुलभ होगा ।

होने वाले पति के मोबाइल में दिखी 'दूसरी' लड़की की फोटो

नाबालिग मंगेतर ने बिजली के तार से घोंट दिया गला

कटनी (नप्र)। मध्य प्रदेश के कटनी जिले में पुलिस में चौंकाने वाला खुलासा किया है। यहां ससुराल पहुंचे एक युवक की उसकी ही होने वाली नाबालिग पत्नी (मंगेतर) ने हत्या कर दी। हत्या की वजह बेहद चौंकाने वाली है। युवक के मोबाइल में किसी और लड़की की फोटो देखकर मंगेतर का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया। आवेश में आकर उसने बिजली के तार से गला घोंटकर अपने होने वाले पति को मौत के घाट उतार दिया है। पुलिस ने मामले का पर्दाफाश करते हुए आरोपी नाबालिग को हिरासत में लेकर किशोर न्यायालय में पेश किया है।

होने वाली पत्नी से मिलने पहुंचा था पति- दरअसल पूरी घटना कटनी जिले रीठी थाना क्षेत्र के खम्हरिया गांव की है। पुलिस के अनुसार, मृतक की पहचान सुनील आदिवासी, 20 वर्ष निवासी पड़वार थाना विजयराघवगढ़ के रूप में हुई है। सुनील की शादी रीठी के खम्हरिया गांव की एक नाबालिग लड़की से तय हुई थी। बुधवार की रात सुनील अपनी होने वाली पत्नी से मिलने उसके गांव खम्हरिया पहुंचा था। दोनों के बीच बातचीत चल रही थी। इसी दौरान मंगेतर ने सुनील का मोबाइल चेक किया।

लड़की की फोटो देख हुआ विवाद- पूछताछ में आरोपी प्रेमिका ने पुलिस को बताया कि मोबाइल चेक करते समय उसे किसी दूसरी लड़की की फोटो दिख गई। फोटो देखते ही उसे शक हुआ और दोनों के बीच तीखी बहस शुरू हो गई।

प्रसाद खाने से एक ही परिवार के 18 लोग बीमार

तबीयत बिगड़ने पर जबलपुर-गोटेगांव में भर्ती, एक की हालत नाजुक, नागपुर रेफर

जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश के जबलपुर में प्रसाद के रूप में मिठाई खाने से एक ही परिवार के 18 लोगों की तबीयत बिगड़ गई, जिन्हें नरसिंहपुर जिले के गोटेगांव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सहित जबलपुर में भर्ती कराया गया है। इनमें से एक की हालत नाजुक है, जिसे नागपुर रेफर किया गया है।

जानकारी के मुताबिक भेड़ाघाट चौराहे पर रहने वाले पटेल परिवार ने बुधवार को बीकानेर स्वीट्स से 4 किलो मिठाई खरीदी थी।

गुरुवार को परिवार के सदस्य त्रिपुर सुंदरी मंदिर पहुंचे, जहां पूजा-पाठ के बाद उन्होंने प्रसाद के रूप में वही मिठाई खाई। गुरुवार शाम से ही तबीयत बिगड़ने लगी थी, जब हालत ज्यादा खराब हुई तो शुक्रवार को सभी बीमारों को अस्पताल में भर्ती कराया है।

पीड़ित परिवार के रिश्तेदार रोहित पटेल ने बताया कि बीमार लोगों में दो पुरुष हैं, शेष बच्चे और महिलाएं हैं। उनका कहना है कि फिलहाल सभी लोगों का इलाज करवाया जा रहा है। इसके साथ ही भेड़ाघाट थाना पुलिस को भी सूचना दी गई है।

देर रात बिगड़ी तबीयत- गुरुवार रात अचानक परिवार के कई सदस्यों की तबीयत बिगड़ने लगी। उन्हें उल्टी और दस्त होने लगे।

आनन-फानन में शुक्रवार को उन्हें जिला अस्पताल जबलपुर सहित निजी अस्पतालों में भर्ती कराया गया। वहीं कुछ लोगों को नरसिंहपुर जिले के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोटेगांव में इलाज के लिए भर्ती किया गया।

एक की हालत नाजुक- निजी अस्पताल में भर्ती एक मरीज की हालत बिगड़ने पर उसे नागपुर रेफर किया गया है, जहां उसकी स्थिति गंभीर बताई जा रही है। फिलहाल मामले को लेकर स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन सतर्क हो गया है।

उल्टी दस्त के बाद बिगड़ी तबीयत

भेड़ाघाट निवासी रोहित पटेल ने बताया कि मिठाई खाने के बाद परिवार के कई लोगों की तबीयत अचानक बिगड़ गई। उन्होंने कहा कि जैसे ही लोगों को उल्टी और दस्त की शिकायत हुई, उन्हें तुरंत इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन उनकी हालत में अभी तक कोई सुधार नहीं हुआ।

विक्टोरिया जिला अस्पताल के सिविल सर्जन डॉ. नवीन कोठारी का कहना है कि डायरिया के चार मरीज आए थे। जिसमें दो महिला और दो बच्चे शामिल हैं। प्रारंभिक इलाज अस्पताल में किया गया है और भर्ती करने की सलाह दी गई थी, परंतु भर्ती होने का पर्चा नहीं बनवाया है। चार लोगों का एक साथ आना कहीं ना कहीं संदेहजनक है।

बसामन मामा गौवंश वन्य विहार में गौ कथा का दिव्य समापन, धर्म व गौ संरक्षण का संकल्प सुदृढ़

भोपाल। बसामन मामा गौवंश वन्य विहार में स्थित श्री रेवासा धाम एवं श्री वृंदावन धाम के पावन सानिध्य में मलूक पीठाधीश्वर परम पूज्य श्री राजेंद्रदास जी महाराज द्वारा आयोजित गौ कथा एवं गौ आधारित प्राकृतिक खेती विषयक दिव्य कथा का तीसरा एवं अंतिम दिवस अत्यंत भावपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने श्रद्धा, विश्वास और भक्ति के साथ कथा श्रवण किया।

महाराज श्री ने शास्त्रों का उल्लेख करते हुए कहा कि यह पृथ्वी सात स्तंभों पर आधारित है। प्रथम स्तंभ गौ माता हैं, द्वितीय ब्राह्मण, तृतीय वेद, चतुर्थ सती-सावित्री पतिवृता नारियां, पंचम सत्यवादी पुरुष, षष्ठम लोभरहित पुरुष और सप्तम दानशील पुरुष। इन सातों तत्वों के संरक्षण से ही समाज और सृष्टि का संतुलन बना रहता है। चित्रकूट के संत शिरोमणि संकादिक महाराज भी गोकथा में शामिल हुए। मलूक पीठाधीश्वर श्री राजेंद्रदास देवाचार्य जी महाराज की उपस्थिति में बसामन मामा गौधाम परिसर में ऋषिकुलम आवास गृह का भूमिपूजन किया एवं पीपल का वृक्षारोपण किया। महाराज श्री ने कहा कि युग निर्माता ब्राह्मण होता है। जो संपूर्ण समाज की पीड़ा को अनुभव करे, वही सच्चा ब्राह्मण है। धर्माचरण से ही अर्थ और काम रूपी पुरुषार्थ की सिद्धि संभव है। जब अर्थ की प्राप्ति धर्म के अनुशासन और नियंत्रण में होती है, तब वह अर्थ अनर्थ का कारण नहीं बनता, बल्कि लोक कल्याण का साधन बनता है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि अपवित्र धन कभी पवित्र कार्यों में नहीं लगता और जो धन धर्मकार्य में समर्पित होता है, वह स्वयं पवित्र हो जाता है।

उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि हम सबके लिए यह अत्यंत सौभाग्य का विषय है कि पूज्य श्री राजेंद्रदास जी महाराज के मुखारविंद से अमृतवाणी श्रवण का अवसर प्राप्त हुआ। एक ओर बसामन मामा की पुण्यभूमि, जहाँ दस हजार गौ माताओं के संरक्षण एवं संवर्धन का विशाल प्रकल्प संचालित है, और दूसरी ओर पूज्य महाराज श्री का दिव्य प्रवचन यह संगम सचमुच त्रिवेणी के समान है, जो दीर्घकाल तक समाज का कल्याण करता रहेगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि गौ माता का सम्मान ही मानवता का सम्मान है। यदि गौ माता का अपमान होगा तो मानव जाति का कल्याण संभव नहीं। उन्होंने कहा कि महाराज श्री के प्रवचनों से उन्हें गौ संरक्षण एवं संवर्धन के कार्य में और अधिक ऊर्जा एवं संकल्प प्राप्त हुआ है। उन्होंने भावुकता से कहा कि कभी-कभी जब वे किसी कठिन कार्य का दायित्व लेते हैं और वह सहज ही पूर्ण हो जाता है, तो उन्हें अनुभव होता है कि यह सब गौ माता की कृपा और उनकी प्रसन्नता का ही परिणाम है।

'आंख मूंदकर' अपील न करें

समय बर्बाद करने पर हाइकोर्ट ने मप्र सरकार पर ठोका 10 हजार का जुर्माना

जबलपुर (नप्र)। हाईकोर्ट ने राज्य सरकार पर दस हजार रुपये का जुर्माना लगाया है। जस्टिस ए के सिंह ने यह फैसला एक क्रिमिनल रिवीजन अपील को खारिज करते हुए सुनाया। कोर्ट ने कहा कि कानून को ठीक से जाने बिना आंख मूंदकर अपील दायर करने से राज्य सरकार और कोर्ट दोनों का समय बर्बाद होता है।

वाइल्ड एनिमल प्रोटेक्शन से जुड़ा है मामला- यह मामला वाइल्ड एनिमल प्रोटेक्शन एक्ट 1972 से जुड़ा था। सरकार ने ट्रायल कोर्ट के उस फैसले के खिलाफ अपील दायर की थी जिसमें जुगल किशोर नाम के आरोपी को बरी कर दिया गया था। ट्रायल कोर्ट ने एक

दूसरे आरोपी को सजा सुनाई थी। इस फैसले के खिलाफ एडिशनल सेशंस जज पन्ना के सामने अपील की गई थी। एडिशनल सेशंस जज ने 29 जून 2013 को अपने आदेश में कहा था कि यह अपील हाईकोर्ट में सेक्शन 378 (4) के तहत फाइल होनी चाहिए थी।

बिना सोचे समझे दायर की अपील- हाईकोर्ट की एकलपीठ ने पाया कि सरकार की रिवीजन अपील में यह ठीक से नहीं बताया गया था कि एडिशनल सेशंस जज का आदेश कानून के हिसाब से गलत कैसे था। कोर्ट ने यह भी कहा कि अपील कोर्ट ने अधिकार क्षेत्र का एक अहम मुद्दा तय किया था। ऐसा लगा कि राज्य सरकार की यह अपील बिना सोचे-समझे और जल्दबाजी में तैयार की गई थी। इसमें विधि विभाग और महाधिवक्ता कार्यालय से भी ठीक से जानकारी नहीं ली गई थी।

कोर्ट ने माना पैसे और समय की बर्बादी- जस्टिस ए के सिंह ने अपने आदेश में साफ कहा कि कानून को जाने बिना यूं ही अपील दायर करना राज्य और कोर्ट के समय और पैसे की बर्बादी है। इसलिए, एकलपीठ ने राज्य सरकार पर दस हजार रुपये का जुर्माना लगाया और क्रिमिनल रिवीजन अपील को खारिज कर दिया। कोर्ट ने यह भी कहा कि यह राशि संबंधित दोषी अधिकारियों से वसूली जा सकती है।

शिवालय परिसर में सजने लगी दुकानें, लगे मनोरंजन को झूले प्राचीन नगरी सोहागपुर ब्लाक में निकलती है प्रतिमाएं

सोहागपुर। शिवालय परिसर पर महाशिवरात्रि पर्व को लेकर व्यापारी अपनी अपनी दुकानें सजानें में लग गए हैं। 15 से 19 फरवरी तक मेले का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें विभिन्न सामग्रियां की दुकानें लगाई जा रही हैं। वहीं मनोरंजन के लिए झूलें भी लगाएं गए हैं। वाणासुर की प्राचीन नगरी कहलाने वाले सोहागपुर में ही नहीं आस-पास के क्षेत्रों में पाषाण प्रतिमाएं खुदाई के समय निकलती रहती है। जिसमें पलकमती नदी पर रिपटा बनाते समय, रामगंज में भी खुदाई करते समय, पुराने पुलिस थाने में सुलभ केन्द्र बनाते समय आदि स्थानों से मूर्तियां निकलती रहती हैं। वहीं आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रतिमाएं मिलने के प्रमाण हैं। इसके अलावा ग्राम भटगांव में नर्मदा नदी घाट एवं ग्राम के बीचोंबीच रहस्यात्मक अवशेष बिखरे पड़े हुए हैं। इस संबंध में श्री ठाकुर ने अवशेष के चित्र प्रदान करते कहा कि नर्मदा नदी घाट पर विशालकाय मंदिर के अवशेष पड़े हुए हैं।यदि पुरातत्व विभाग सर्वेक्षण करें तो क्षेत्र के प्राचीन रहस्यों से पर्दा उठ सकता है।

शिव पार्वती का चित्र सुन्दर मालवीय आशा फोटो ने प्रदान किया है। आलिंगनबद्ध शिव पार्वती मंदिर में

महाशिवरात्रि पर्व प्रतिमा क्षेत्र के नागरिकों की आस्था का केंद्र है ।पंडित गोविंद प्रसाद शर्मा, पंडित माखनदास शर्मा पंडित शुभम शर्मा ने इस प्रतिनिधि को बताया कि विख्यात पाषाण शिव पार्वती प्रतिमा में शिवजी का पूरा परिवार,गण देखें जा सकते हैं। प्रतिमा ओमकार आरती स्वरूप है। जिसमें जय शिव ओमकारा ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धांगिनी धारा, नागेश्वर, गणेश, कार्तिकेय, सेनापति वीरभद्र , कीर्तिमुख गण, नंदी, शेर, भक्त रावण भी हैं। प्रतिमा ऐसा दर्शाती है कि अर्धरात्रि के समय भगवान भोलेशंकर माता पार्वती को अमर कथा सुनाने का आलोकित दृश्य है। मेरे पूर्वजों ने पीढ़ी दर पीढ़ी प्राचीन हनुमान मंदिर में करीबन 300 सौ सालों से पूजन अर्चना की है। इसी मंदिर के सामने राम मंदिर एवं माता दुर्गा जी मंदिर है । हमारे परिजन ही मंदिर की पूजा अर्चना करते हैं। वकील प्रांजल तिवारी ने कहा कि सोहागपुर अपनी प्राचीन विरासत के लिए विख्यात है। इस नगर के इतिहास को लेकर कई

किंवदंतियां प्रचलित है। सोहागपुर क्षेत्र की खुदाईयों के समय की प्रतिमाएं जिला मुख्यालय ले जाई गई एवं क्षेत्र में बिखरी प्रतिमाओं का संग्रहालय सोहागपुर में बनाया जाए। मेला स्थल में झूलें लगाएं गए हैं । प्रबुद्ध नागरिक शरद चौरसिया ने प्रशासन से आग्रह किया है कि कई नगरों में झूलों की दुर्घनाओं से सबक लेकर सुरक्षा का ध्यान रख जाना चाहिए। इधर मेला स्थल का एसडीएम प्रियंका भल्लावी,एसडीओ पुलिस संजू चौहान,नगर निरीक्षक उषा मरावी आदि अधिकारियों ने निरीक्षण करके आवश्यक निर्देश दिए। इधर बाबा हरिओम क्लब महाशिवरात्रि पर भोलेनाथ की बरात निकालेगी।इस बरात में पिछले साल की तरह भोलेनाथ के साथ उनके गण,भूत प्रेत आदि भी झूमते-गाते नाचते भारी संख्या में नागरिकों के साथ प्रारंभ होगी। बारात नवीन बस स्टैंड से प्रारंभ होकर।

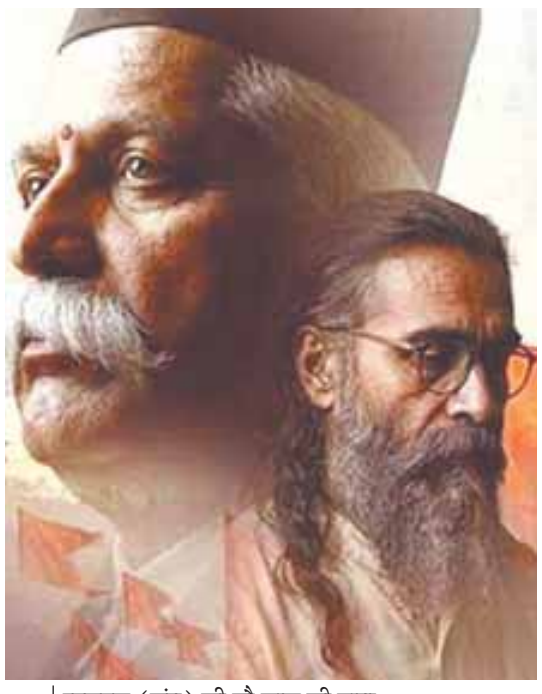

संघ के 100 साल को याद दिलाएगी 'शतक'

फिल्म 'शतक : संघ के 100 वर्ष' 20 फ़रवरी को रिलीज हो रही है। इसका ट्रेलर अजय देवगन की प्रभावशाली आवाज़ में है। इसलिए यह दर्शकों के लिए खास बन गया। उनकी आवाज़ ट्रेलर में न सिर्फ गहराई और भाव जोड़ती हैं, बल्कि दर्शकों में देशभक्ति का भाव भी जागृत करती है। ट्रेलर में त्याग, संघर्ष और राष्ट्र-प्रथम की भावना से जुड़ी 100 साल की यात्रा है। यह उन लोगों को श्रद्धांजलि देता है जिन्होंने अनुशासन, सेवा और समर्पण के साथ समाज और देश के लिए अपना जीवन समर्पित किया।

आरएसएस (संघ) की सौ साल की यात्रा पर बनी यह फिल्म एक ऐसी विचारधारा की कहानी है, जिसे कभी समय के साथ समाप्त हो जाने वाला माना गया था। लेकिन, वह हर पीढ़ी के साथ और अधिक सशक्त होती गई। गुरुजी एमएस गोलवलकर के शब्दों से प्रेरित होकर फिल्म दिखाती है कि संघ को 'समय की तरह अटूट' माना गया है। लोगों को जोड़ना इस यात्रा का मुख्य आधार रहा। यह फिल्म सिर्फ इतिहास नहीं बताती, बल्कि लंबे समय से चली आ रही धारणाओं और गलतफहमियों पर भी अपनी बात रखती है। संघ की किताबों और दस्तावेजों के आधार पर बनी यह फिल्म अपने नजरिए से उन घटनाओं और योगदानों को सामने लाने की कोशिश करती है, जिन्हें अक्सर कम जाना गया।

एक सदी सिर्फ समय नहीं होता, बल्कि कई पीढ़ियों के त्याग और देश के लिए किए गए योगदान का प्रतीक होती है। इन वर्षों में संघ ने सेवा, एकता और सांस्कृतिक पहचान पर अहम भूमिका निभाई है। 'शतक' इसी लंबी यात्रा को दिखाने की कोशिश है। यह सिर्फ एक संगठन की नहीं, बल्कि एक विचार की कहानी है, जो समय के साथ मजबूती से खड़ा रहा। फिल्म 'शतक' के ट्रेलर ने इस संगठन के लंबे और उलझे इतिहास की गहराई से पड़ताल की। इस फिल्म में अजय देवगन ने अपनी आवाज से कहानी को गंभीरता और भावनात्मकता प्रदान की।

केशव बलिराम हेडगेवार ने 27 सितंबर 1925 को एक छोटे से स्वयंसेवी आंदोलन के रूप में इस संगठन की स्थापना की थी, जो धीरे-धीरे पूरे देश में फैल गया। यह फिल्म इन शुरुआती दौर को फिर से याद करती है और साथ ही माधव सदाशिव गोलवलकर के वैचारिक प्रभाव को भी दर्शाती है, जिनके विचारों ने 'संघ' की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह एक पारंपरिक वृत्तचित्र के बजाए ऐसी फिल्म है जिसमें अनुभव, विचार और दृढ़ विश्वास को उजागर करने का प्रयास किया है।

अनिल डी अग्रवाल ने फिल्म की परिकल्पना की, जिसका निर्देशन आशीष मल्ल ने किया। वीर कपूर इसके निर्माता हैं, जबकि आशीष तिवारी सह निर्माता हैं। 'अदा 360 डिग्री एलएलपी' और पैनोरमा के सहयोग से बनी यह फिल्म 20 फरवरी को रिलीज होने वाली है। इससे पहले अजय देवगन ने भी फिल्म का टीजर शेयर कर इसकी तारीफ की। उन्होंने बताया कि संघ को सौ साल पूरे होने पर ढेर सारी बधाई, इन सौ सालों में राष्ट्र निर्माण में संघ का बड़ा योगदान रहा है। इस काम पर और रोशनी डालने आ रही है फिल्म 'शतक' और ये रही उसकी पहली झलक। निश्चित रूप से यह फिल्म दर्शकों के मन में राष्ट्रवाद के साथ उत्सुकता जगाने वाला है। फिल्म संघ की सौ साल लंबी यात्रा, उसके संघर्ष और देश को बनाने में दिए उनके योगदानों को पर्दे पर उतारने की एक अहम कोशिश है। फिल्म के ट्रेलर में अजय देवगन ने न सिर्फ कहानी में गहराई और गंभीरता जोड़ी, बल्कि इसे एक बड़े कैनवास पर दिखाने का काम भी किया। यह फिल्म उन अनगिनत स्वयंसेवकों को एक श्रद्धांजलि है, जिन्होंने अनुशासन, सेवा और समर्पण के साथ समाज के लिए अपना जीवन न्योछावर कर दिया।

फिल्म एक ऐसी विचारधारा पर ध्यान दिलाती है, जिसे समय-समय पर कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। लेकिन, वह हर पीढ़ी के साथ और अधिक मजबूत होकर उभरी है। इसे लेकर एक यूजर का कहना है कि 'रोंगटे खड़े हो रहे हैं!' दूसरा यूजर पूछता है 'क्यों कोई असली हीरो नहीं है. पूरी एआई फिल्म!' गुरुजी एमएस गोलवलकर के नजरिये और संघ के ऑफिशियल दस्तावेजों पर आधारित यह फिल्म दिखाती है कि कैसे 'समय की तरह अटूट' रहते हुए इस संगठन ने लोगों को जोड़ने को अपना अहम मकसद बनाया।

ट्रेलर से साफ है कि 'शतक' केवल एक ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं, बल्कि यह 'संघ' को लेकर समाज में मौजूद पुरानी धारणाओं और गलतफहमियों को तर्कों के जरिए सुलझाने की एक कोशिश भी है। यह उन अनछुए पहलुओं और घटनाओं को सामने लाने की कोशिश करती है, जिन्हें अक्सर मैनस्ट्रीम के विमर्श में कम जगह मिली। अजय देवगन ने इस प्रोजेक्ट से जुड़ने को अपने लिए सम्मान की बात बताया। उन्होंने संघ की 100 साल की यात्रा को सिर्फ समय का एक हिस्सा नहीं, बल्कि पीढ़ियों के त्याग और पहचान को बनाए रखने के गहरे संकल्प का प्रतीक बताया। यह कहानी एक संगठन की सीमाओं से परे एक ऐसे आइडिया की है, जो समय की कसौटी पर हमेशा खरा उतरा है। मेकर वीर कपूर और को-प्रोड्यूसर आशीष तिवारी की प्रस्तुति तकनीकी रूप से भी काफी रॉयल नजर आ रही है।

रियल बॉक्स

विदाई नहीं, यह नए सुरों का उद्गम

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्मों के पार्श्व गायन के इतिहास में कुछ आवाजें कान तक पहुंचती हैं, लेकिन कुछ सीधे रूह में उतरती हैं। मोहम्मद रफी, किशोर कुमार और सोनू निगम के बाद अगर किसी एक नाम ने पूरे देश की धड़कन को नियंत्रित किया, तो वह हैं अरिजीत सिंह। हाल के दिनों में उनके फिल्मी गायकी से दूरी बनाने की चर्चाओं ने प्रशंसकों को उदास कर दिया। लेकिन, गहराई से देखें तो यह 'अंत' नहीं एक 'रूपांतरण' है। एक कलाकार जब अपनी कला के चरम पर होता है, तो वह अक्सर व्यावसायिकता की बेड़ियों को तोड़कर संगीत की शुद्धता की ओर लौटना चाहता है। अरिजीत का फिल्मों से मोहभंग होना दरअसल उनके संगीत के प्रति उस गहरे प्रेम का हिस्सा है, जो चार्टबस्टर्स से ऊपर उठकर वास्तविक 'कला' की तलाश में है। अरिजीत ने पहले भी कई बार संकेत दिया कि फिल्म इंडस्ट्री का काम करने का तरीका थका देने वाला है। उनका मानना है कि फिल्मों में संगीत 'कहानी' के अधीन होता है, जिससे कलाकार की रचनात्मक आजादी में बेड़ियां पड़ जाती है। उन्होंने अपना खुद का लेबल 'ओरियन म्यूजिक' शुरू किया, जिसके जरिए वे गैर-फिल्मी, शुद्ध संगीत को बढ़ावा दे रहे हैं। इसके अलावा वे बंगाली संगीत से भी अपनी जड़ों की ओर लौट रहे हैं। वे बंगाली लोक संगीत व स्वतंत्र गीतों पर अधिक ध्यान दे रहे।

अरिजीत सिंह के संन्यास या फिल्मों में कम सक्रिय होने की खबर ने संगीतकारों के सामने एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया कि अरिजीत के बाद कौन! पिछले एक दशक में लगभग हर फिल्म में दूसरा हिट गाना उनकी आवाज में रहा। उनकी गैरमौजूदगी में फिल्म संगीत में जो खालीपन आएगा, उसे भरना फिलहाल मुश्किल नजर आता है। अरिजीत सिंह का फिल्मों से मोहभंग होना, उनके 'संगीत' के खत्म होने का संकेत नहीं, बल्कि यह उनके 'संगीतज्ञ' के रूप में पुनर्जन्म जैसा है। वे एक ऐसे कलाकार हैं जो जब स्टेज पर उतरते हैं, तो लाखों की भीड़ को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। उनका संन्यास दरअसल व्यावसायिक शोर से 'मौन' की तरफ की एक यात्रा है। वे आगे भी संगीत से जुड़े रहेंगे और शायद अब वे हमें वह संगीत देंगे, जो फ़िल्मी कथानक की मांग से नहीं, बल्कि उनके दिल की गहराई से निकलेगा। अरिजीत सिंह स्वभाव से बेहद अंतर्मुखी हैं, लेकिन उनका करियर विवादों से अछूता नहीं रहा। उनके छोटे से संगीत करियर में कई बड़े विवाद हुए। सलमान खान की फ़िल्म 'सुल्तान' के गाने 'जग घूमेया' का विवाद जगजाहिर है। एक अवॉर्ड फंक्शन के दौरान अरिजीत और सलमान के बीच हुई हल्की नोकझोंक ने बड़ा रूप ले लिया था। इसका परिणाम यह हुआ कि सलमान की फिल्म 'सुल्तान' से अरिजीत का गाना हटा दिया। अरिजीत ने सार्वजनिक रूप से माफी भी मांगी, लेकिन सलमान के साथ उनके रिश्ते लंबे समय तक ठंडे रहे।

अरिजीत की सफलता का सबसे बड़ा राज उनकी गायकी की विविधता को माना जा सकता है। उनके पास एक ऐसी आवाज है, जो अकेलेपन का दर्द बयां करती है। 'जुदा होके भी' जैसे गानों में उनकी आवाज का कंपन रूह कंपा देता है। उनकी गायकी की जड़ें हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में भी गहरी हैं, जो 'लाल इश्क' जैसे कठिन गीतों में स्पष्ट दिखती है। जहां तक मॉडर्न टेक्सचर की बात है, तो वे जैज़, रॉक और सूफी को भी उतनी ही सहजता से गाते हैं। वे अक्सर मीडिया और रियलिटी शो के बनावटीपन की आलोचना करते रहे हैं। एक बार रिकॉर्डिंग स्टूडियो में फोटोग्राफर्स के साथ उनकी झड़प भी चर्चा का विषय बनी थी। उन्होंने बेबाकी से स्वीकार किया कि आज के दौर में गानों में 'पिच करेक्शन' का इस्तेमाल होता है, जिसे लेकर संगीत उद्योग के पुराने दिग्गजों के बीच बहस छिड़ गई थी। उनकी सहजता इस बात से आंकी जा सकती है कि उनके लिए सफलता का मतलब दिखावा नहीं है। यही वजह है कि करोड़ों कमाने वाले इस सिंगर ने गांव की शांति चुनी, जो आज के दौर में दुर्लभ है। उनका फिल्म संगीत से संन्यास का फैसला नई पीढ़ी के युवाओं को प्रेरित करेगा कि शोहरत के बाद भी अपनी जड़ों को कभी न भूलें। लेकिन, अरिजीत की आवाज के बाद फिल्म इंडस्ट्री पर ये असर पड़ेगा कि रोमांटिक ट्रैक्स सूने पड़े रहेंगे।

पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले के एक छोटे से कस्बे जी गंज से निकलकर मुंबई की

चकाचौंध में अपनी जगह बनाना उनके लिए आसान नहीं था। 2005 में 'फेम गुरुकुल' जैसे रियलिटी शो से बाहर होने के बाद, उन्होंने हार नहीं मानी। उन्होंने संगीतकार प्रीतम के साथ बतौर असिस्टेंट काम किया और प्रोग्रामिंग सीखी। यह तकनीकी समझ ही आज उनके संगीत को दूसरों से अलग बनाती है। 2013 में आई फिल्म 'आशिकी 2' के गाने 'तुम ही हो' ने उन्हें रातों-रात ग्लोबल आइकन बनाया। इसके बाद चन्ना मेरेया, फिर ले आया दिल और 'हवाएं' जैसे गानों ने उन्हें वह मुकाम दिया जहां उनकी तुलना दिग्गज गायकों से होने लगी। अरिजीत सिंह की कहानी सिर्फ गानों की नहीं, बल्कि एक साधारण इंसान की है जो ग्लैमर की दुनिया में रहने के बावजूद जमीन से जुड़ा रहा। वे मुंबई के अपने अपार्टमेंट में सिर्फ काम के लिए जाते हैं, उनकी असल जिंदगी तो जी गंज में ही बीतती है। वे सड़कों पर घूमते हैं, बच्चों को लोकल स्कूल में पढ़ाते हैं। अरिजीत ने कभी अमीरी का दिखावा नहीं किया। सादगी उनके फैसले की जड़ में है। प्लेबैक सिंगिंग में फिल्मों की डिमांड, डेडलाइन और कंपोज आते हैं। अरिजीत हमेशा कहते रहे कि वो मूल रूप से आजाद संगीतकार बनाना चाहते थे। 'फेम' से पहले की वो दुनिया उन्हें ज्यादा पसंद है, जहां प्रयोग और व्यक्तिगत एक्सप्रेशन मायने रखते थे।

अरिजीत का फिल्म संगीत सफर काफी उतार-चढ़ाव भरा रहा। 2016 में 'सुल्तान' का विवाद चरम था। 'जग घूमेया' उनका गाया रोमांटिक ट्रैक था, जो सलमान खान और अनुष्का शर्मा पर फिल्माया गया। लेकिन, रिलीज में राहत फतेह अली खान का वर्जन रखा गया। अरिजीत ने सोशल मीडिया पर सलमान से सार्वजनिक माफी मांगी: 'प्लीज मेरा गाना न हटाएं, उसी के साथ रिटायर होने दें।' पोस्ट डिलीट कर दी, लेकिन हंगामा मच गया। अफवाहें उड़ीं कि सलमान ने उन्हें ब्लैकलिस्ट करने की कोशिश की। फिर भी, अरिजीत रुके नहीं। हर फिल्म में उनका गाना मिलता रहा। 2023 में 'टाइगर 3' ने सुलह कराई। उन्होंने 'रुआन' और 'लेके प्रभु का नाम' गाए। सलमान ने प्रमोशन में इसे पहली कोलेबरेशन कहा। बाद में सलमान यह भी बोले कि अरिजीत मेरे अच्छे दोस्त हैं, मिसअंडरस्टैंडिंग मेरी थी। आगे 'गलवान' में भी गाएंगे। ऐसे विवादों के फैसले को रोचक जरूर बनाया। सोनू निगम विरुद्ध अरिजीत की फैन-वॉर भी हमेशा चलती रही। लेकिन, सोनू ने हमेशा उन्हें टॉप पर रखा और अरिजीत ने भी कभी होड़ नहीं लगाई। साफ है कि प्लेबैक ने उन्हें स्टार बनाया, लेकिन बेड़ियां भी डाली। अब आजाद संगीत में पूरा आसमान खुला है। न डायरेक्टर की मर्जी, न स्टार्स का दबाव। फैंस का दिल टूटा, पर ये नया रूप उनकी सादगी से मेल खाता है।

उनका ये बदलाव स्वाभाविक भी लगता है। फिल्मों में हर बड़ी फिल्म में उनका एक गाना होना उनके लिए थकाऊ फॉर्मूला बन गया था। अरिजीत ने कभी खुद को स्टार नहीं माना। फैंस के लिए ये शॉक है, पर उनके लिए एक बंधन से मुक्ति है। दरअसल, मॉडर्न फिल्म इंडस्ट्री में अरिजीत की आवाज अनिवार्य सी हो गई थी। उनके बिना 'पैरलल सिनेमा' से लेकर मेनस्ट्रीम तक गाने फीके लगेंगे। लेकिन, अरिजीत के लिए यह फैसला करियर रिव्यू की तरह है। उनके इंडिपेंडेंट ट्रैक्स पहले से हिट हैं। शायद नया एल्बम धमाल मचाए। फैंस को उम्मीद कि ये विदाई स्थायी न हो। अंत में, अरिजीत सिंह सिर्फ सिंगर नहीं, एक प्रेरणा हैं। प्लेबैक छोड़ना उनका साहसिक कदम है। जो शोहरत से ऊपर खुद को चुनते हैं। क्या ये सपना टूटा या नया सपना शुरू होगा, ये तो आने वाला वक्त बताएगा। सिनेमा के इस 'सुपर सिंगर' का यह फैसला न सिर्फ म्यूजिक इंडस्ट्री के लिए सदमा जैसा है, बल्कि एक सांस्कृतिक बदलाव का संकेत भी। क्या ये शोहरत की चरम पर थकान है या व्यक्तिगत स्वतंत्रता की तलाश! अभी इस सवाल का जवाब बाहर आना बाकी है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अशोक जोशी

वैलेंटाइन डे

समय के साथ बदल गए सिनेमा के 'लैला मजनू'

सारी दुनिया में 14 फ़रवरी को वैलेंटाइन डे मनाया जाता है। समय के साथ भारत में भी यह परम्परा लोकप्रिय होती गई। आमतौर पर इस दिन को प्रेम प्रदर्शन का

दिन माना जाता है। जबकि, प्रेम प्रदर्शन की नहीं बल्कि अनुभव करने वाला विषय है। दुनिया से आज भले ही प्रेम नदारद होता जा रहा हो, लेकिन भारत में प्रेम की परम्परा को शाश्वत माना गया है। पौराणिक काल से लेकर ऐतिहासिक दौर से लेकर सामाजिक तथा लोक जीवन में भी प्रेम संबंध बनते रहे हैं और इन्हें कभी विरोध का सामना करना पडा तो कभी यह प्रेम पूजा बन गया है।

हिंदी साहित्य और लोक कथाओं में कालजयी प्रेम कहानियाँ भावनाओं की गहराई और त्याग को दर्शाती हैं। राधा-कृष्ण भारतीय पौराणिक कथाओं में दिव्य प्रेम का प्रतीक, जो भौतिक जगत से परे आत्मा और ईश्वर के मिलन को दर्शाता है। प्रमुख क्लासिक कहानियों में 'हीर-रांझा' पंजाब की सबसे प्रसिद्ध लोक कथा, जो हीर की सुंदरता और रांझा के प्रति उसके निस्वार्थ प्रेम की त्रासदी को दर्शाती है। पृथ्वीराज-संयुक्त ऐतिहासिक प्रेम कहानी, जो विपरीत परिस्थितियों के बावजूद प्रेम की जीत को रेखांकित करती है। लैला-मजनू प्रेम में दीवानगी और त्याग की झलक मिलती है। चूंकि सिनेमा को समाज का दर्पण कहा गया है इसलिए हिन्दी सिनेमा में भी समय के साथ चलने वाली प्रेम कहानियों को पर्दे पर उकेरा गया है।

प्रेम के अंकुर कहां और कब फूटे कोई नहीं जानता। लेकिन, यह तय है कि दुनिया की उत्पत्ति ही प्रेम के कारण हुई है। पौराणिक काल में भगवान कृष्ण को सबसे बडा प्रेमी माना जाता है। राधा-कृष्ण, कृष्ण-मीरा और कृष्ण-रुक्मिणी तथा सुभद्रा की कहानी को बड़े पर्दे पर उतारा गया है। मजे की बात यह है कि राधा कृष्ण पर आधारित पहली फिल्म बंगाली भाषा में बनी थी। इसके बाद आठवें दशक में सोभन बाबू और जया प्रदा अभिनीत 'राधा कृष्ण' प्रदर्शित हुई थी। 1947 में 'मीरा' फिल्म आई जो मीरा के कृष्ण प्रेम पर आधारित थी। इस फिल्म में महान गायिका सुब्बालक्ष्मी ने मुख्य भूमिका निभाई थी। इसके बाद 1079 में गुलजार ने हेमा मालिनी और विनोद खन्ना को लेकर 'मीरा' का निर्माण किया। इस फिल्म में चर्चित अभिनेता और अभिनेत्री के होने के कारण यह फिल्म के पात्रों के साथ न्याय नहीं कर पाए और फिल्म पिट गई। 1943 में प्रदर्शित शकुंतला वी शांताराम द्वारा पौराणिक फिल्म है, जो कालिदास के प्रसिद्ध नाटक पर आधारित है। राजकमल कलामंदिर के तहत बनी यह पहली फिल्म थी, जिसमें जयश्री और चंद्रमोहन ने मुख्य भूमिकाएं निभाईं। यह अमेरिका में व्यावसायिक रूप से प्रदर्शित होने वाली पहली भारतीय फिल्म भी बनी।

हमारे यहां ऐसे कई ऐतिहासिक पात्र हुए हैं जिनकी प्रेम गाथाएं पर्दे पर ज्यादा सफल हुई है। इस क्रम में सबसे ज्यादा सफल फिल्म है के आसिफ की 'मुगले आजम।' इस फिल्म में पृथ्वीराज कपूर ने अकबर, दिलीप कुमार ने सलीम और मधुबाला ने अनारकली की भूमिका में जान डाल दी थी। भव्य सेट,दिलचस्प संवाद और कर्णप्रिय गानों के बल पर यह फिल्म की अब तक की सबसे ज्यादा सफल फिल्म है। इसके बाद इस विषय पर आधारित दूसरी फिल्म है आशुतोष गवारीकर की फिल्म 'जोधा अकबर।' हालांकि, इसका विषय 'मुगले आजम' से हटकर अकबर और जोधाबाई की प्रेम कहानी कहता है।

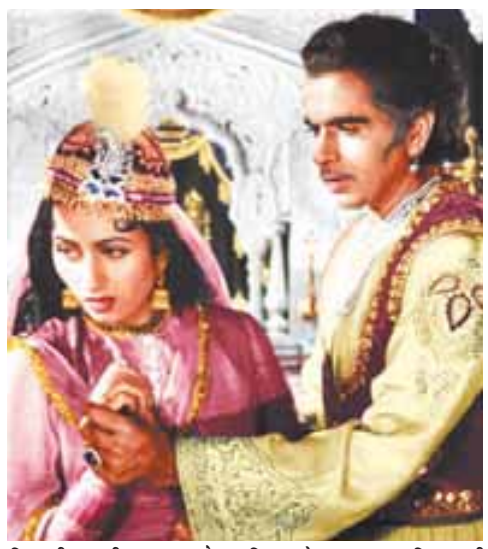

फिर भी अपनी भव्यता और अभिनय के कारण यह फिल्म भी अत्यधिक सफल रही थी।

'मुगले आजम' के दौर में बनी 'अनारकली' को फिल्मिस्तान ने बनाया था जिसमें प्रदीप कुमार और बीना राय ने अभिनय किया था। सी रामचन्द्र ने इसके लिए मधुर संगीत रचा था जिसके बल पर यह फिल्म भी सफल रही। मुगल काल के प्रेम प्रसंगों पर आधारित 1963 में बनी फिल्म 'ताजमहल' शाहजहां और मुमताज महल के प्रेम पर आधारित थी। इस रंगीन फिल्म की विशेषता रोशन का मधुर संगीत था। इसके गीत जो वादा किया निभाना पड़ेगा और पांव छूने दो आज भी लोकप्रिय है।

साठ और सत्तर के दशक में ऐतिहासिक प्रेम कथाओं पर आधारित जो श्वेत श्याम फिल्में बनी उनमें मांडू के अंतिम सुल्तान बाज बहादुर और एक गडरिए की गायिका बेटी रूपमती की प्रेमकथा पर आधारित 1957 की फिल्म 'रानी रूपमती' में भारत भूषण और निरूपा रॉय की भूमिका थी। फिल्म का गीत 'आ लौट के आजा मेरे मीत' आज भी लोकप्रिय है। इसी तरह मगध के राजा चंद्रगुप्त और ग्रीस की हेलेना की युद्ध के बाद प्रेम में बदली कहानी पर 1959 में बनी फिल्म 'सम्राट चन्द्रगुप्त' में भी भारत भूषण और निरूपा रॉय की जोडी थी। इस फिल्म में पहली बार कल्याणजी आनंदजी ने संगीत देकर चाहे पास हो चाहे दूर हो जैसा कर्णप्रिय गाना रचकर इसे सफल फिल्म बनाया था।

1946 में पृथ्वीराज कपूर और मीना कुमारी अभिनीत फिल्म पृथ्वीराज संयोगिता बनी थी, जो इन ऐतिहासिक प्रेमियों पर आधारित थी। इसके बाद 2022 में यशराज फिल्म्स ने अक्षय कुमार तथा मानुषी छिल्लर अभिनीत फिल्म 'सम्राट पृथ्वीराज' का निर्माण किया। 'रजिया सुल्तान' और याकूब की प्रेम कहानी पर आधारित 'रजिया सुल्तान' का दो बार निर्माण हुआ। 1961 में जयराज और निरूपा राय अभिनीत रजिया सुल्तान अपने गीत 'मोहब्बत जिंदा रहती है, मोहब्बत मर नही सकती' के कारण चर्चित हुई, तो 1983 में बनी कमाल अमरोही की फिल्म रजिया सुल्तान को धर्मेंद्र और हेमा मालिनी की जोड़ी के लिए जाना जाता है। लेकिन, यह फिल्म भी नहीं चली। मगध के राजा बिम्बिसार और वैशाली की नगरवधू आम्रपाली की प्रेम कहानी पर आधारित लेख टंडन की फिल्म 'आम्रपाली' में सुनील दत्त और वैजयंती माला की भूमिका थी। फिल्म के गाने कर्णप्रिय थे और कॉस्ट्यूम ऑस्कर विजेता भानु अथैया ने तैयार किए थे। इसके बावजूद यह फिल्म नहीं चली।

इसी तरह ऐतिहासिक प्रेमकथाओं पर आधारित नूरजहां, यहूदी भी नहीं चल पाई । 1984 में रिलीज़ हुई हिंदी फिल्म 'उत्सव' प्राचीन संस्कृत नाटक 'मृच्छकटिकम पर आधारित थी। जिसे 2वीं शताब्दी ईसा पूर्व में शूद्रक ने लिखा था। यह फिल्म उज्जैन की एक धनी वेश्या वसंत सेना (रेखा) और एक गरीब ब्राह्मण चारुदत्त (शेखर सुमन) की प्रेम कहानी को दर्शाती है, जो सामाजिक बंधनों के बीच विकसित होती है। है। उत्सव का निर्माण शशि कपूर ने और निर्देशन गिरीश कर्नाड ने किया था। मन क्यां महका रे जैसे गीत के बावजूद यह फिल्म नहीं चली। हालिया बरसों में जब संजय लीला भंसाली ने मराठा पेशवा बाजीराव और बुंदेलखंड की राजकुमारी मस्तानी की प्रेम कहानी पर आधारित 'बाजीराव मस्तानी' बनाई तो फिल्म ने सफलता के झंडे गाड़ दिए।

लैला-मजनू, हीर-रांझा, सोहनी-महिवाल, शीरी फरहाद ऐसी मध्यकालीन लोक प्रेम कहानियां हैं जो सदियों से अपनी तीव्रता के लिए अमर हैं। इन पर बनी फिल्में भी सफल रही है। इन कहानियों में लैला मजनू पर सबसे ज्यादा फिल्में बनी हैं। इनमें 1953 में बनी शम्मी कपूर और नूतन अभिनीत और उसके बाद 1973 में उनके भतीजे ऋषि कपूर और रंजीता अभिनीत 'लैला मजनू' सबसे ज्यादा सफल रही। बाद वाली लैला मजनू को अपने गीत संगीत के कारण सफलता की ऊंचाईयां तक पहुच गई थी। 1956 में बनी शीरी फरहाद में प्रदीप कुमार और मधुबाला की भूमिकाएं थी। इसका निर्देशन और निर्माण एस्पी ईरानी ने किया है। यह फिल्म शाहनामे के खुसरो और शिरीन की प्रेम कहानी पर आधारित है।

लोकप्रिय कहानियों में पंजाब की माटी से जन्मी हीर रांझा और सोहनी महिवाल की प्रेम कहानियों पर सफल फिल्में बनी हैं। दो बार बनी सोहनी महिवाल अपने गीतों के कारण चर्चित रहीं। पहली फिल्म 1958 में बनी थी। इसमे भारत भूषण और निम्मी की भूमिकाएं थी ।

नौशाद के संगीत से सजी इस फिल्म का गाना हुस्न चला है इश्क से मिलने बहुत लोकप्रिय हुआ था। इसके बाद 1984 में भारत और रूस के सहयोग से बनी सोहनी महिवाल का निर्देशक उमेश मेहरा ने किया था। इसमें सनी देओल और पूनम ढिल्लों के साथ जीनत अमान थी। अन्नु मलिक के मधुर संगीत से रची यह फिल्म बेहद लोकप्रिय हुई थी।

राजस्थान की लोककथा पर आधारित फिल्म ढोला मारू भी सफल रही थी। लेकिन इन तमाम प्रेम कहानियां में हीर रांझा की प्रेम कहानी सबसे ज्यादा हिट हुई । 1970 में चेतन आनंद ने अपनी हीर प्रिया राजवंश, राजकुमार, जयंत और प्राण को लेकर 'हीर रांझा' का निर्माण किया था। पंजाब की पृष्ठभूमि में सरसों के खेतों के बीच फिल्माई गई यह फिल्म बेहद खूबसूरत थी। इसकी एक खास विशेषता यह थी कि फिल्म के सारे संवाद पद्य में थे जिन्हें कैफी आजमी ने बहुत सुंदर तरीके से लिखा था। मदन मोहन ने मिलो न तुम तो हम घबराएं ,ये दुनिया ये महफिल मेरे काम की नहीं जैसे कर्णप्रिय गीतों से इसकी लोकप्रियता में चार चांद लगा दिए थे।

बार्बिजाँ के हसीन परिदृश्य, सुकून वातावरण में कला

कला

पंकज तिवारी
कला समीक्षक

प्रकृति का सानिध्य किसे नहीं भाता होगा? कौन होगा जो प्रकृति से दूर भागना चाहता होगा? पर सच्चाई है कि जैसे-जैसे समय बदला है मनुष्य आधुनिकता के आगोश में लिपटते चला गया है और आधुनिकता के आगोश में लिपटने का प्रतिफल है कि प्रकृति से दूरी बनती चली गयी है। विज्ञान हमारे आपके कार्यों को सरल तो बनाता है पर धीरे-धीरे ही सही हमें आपको कमजोर भी बना रहा होता है। बिजली के आविष्कार ने कृत्रिम प्रकाश, वायु की व्यवस्था करी प्रतिफल ये हुआ कि लोग बाहर बैठने, धूप सेंकने एवं शुद्ध हवा लेने के बजाय घर में ही रहने लगे। घर में उजाला है तो बाहर क्यों? घर में एसी है तो नीम के छाँव की आवश्यकता क्यों? पर सच तो ये है कि हम यहीं भूल कर बैठते हैं। नवशास्त्रीयतावाद, रोमांटिसिज्म के प्रभाव में जकड़े लोगों में कुछ तो ऐसे रहे जिन्हें ये जकड़ बर्दाश्त नहीं थी। कलाकृतियों में जकड़न तो थी ही बड़े-बड़े मशीनों, औद्योगिक आंदोलनों, शहरीकरणों, एवं दूषित होते घर, द्वार, आसमान से भी परेशानी बढ़ने लगी थी। स्टूडियो में बैठकर कृतिम रौशनी के बीच कलाकारी करने से मन उचट रहा था। बाहर वास्तविक, नैसर्गिक हवा, प्रकाश के बीच सृजन कार्य करने का मन हुआ और जन्म हुआ बार्बिजाँ आंदोलन का। यह 19 वीं सदी के महत्वपूर्ण आंदोलनों में से एक था। बार्बिजाँ, पेरिस से लगभग 55-60 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में स्थित फ्रांस के सीन-ए-मार्न क्षेत्र का छोटा, शान्त एवं हरियाली से घिरा गाँव है। जहाँ विशाल और ऐतिहासिक वन फॉन्टेनब्लू वन है, जो लगभग 280 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ था। विशाल और सघन ओक तथा पाइन (चीड़) के वृक्षों की अधिकता यहाँ की विशेषता थी। विशाल एवं सघन पेड़ों के बीच से छनकर आती, छितराती धूप के बीच लहराती, बलखाती शुद्ध हवा के बीच सफेद, भुरे, हरे, पीले रंगों से नहाई धरा के ऊपर फैली कच्ची गलियों का निकलना और उसी पर शहर के भीड़-भाड़, उबाऊ, दूषित परिवेश से त्रस्त किसी कलाकार का पीठ पर ईजल, बैग का भार तो हाथ में कैनवास लिए चलना कुछ ऐसा ही दृश्य क्रियान्वित हुआ रहा होगा पहली दफा। वन में प्रवेश के साथ ही हवा का बदल जाना मन का शांत बिल्कुल शांत हो जाना, टेढ़े-मेढ़े राहों के किनारे छोटे-बड़े चट्टानों का होना, चट्टानों पर जमीं काई या पुराने पत्थर का कालापन उस पर वृक्षों, टहनियों और पत्तों से छन-छन कर बरसती धूप का होना वन के सजीवता को दर्शाता है। प्रकृति के बीच सन्नाटा है और सन्नाटों के बीच कूं..कूं..कां...कां..चह...चह.. करते पक्षियों का कलरव आँख बंद कर एक विशेष यात्रा पर निकल जाने को प्रेरित करता है। कलाकार शांत हो चीजों को ऑब्जर्व करता है, उतार लेता है अपने भीतर सुनहरा, धूसर, सफेद हरे सहित सभी रंगों को और बिखेर देता है एक पूरा संसार अपने सामने फैले विशाल फलक पर। बाद में ऐसे ही दृश्य यहाँ पर आम हो गए और धीरे-धीरे बार्बिजाँ कलाकारों का तीर्थ बन गया। आइए और आगे बढ़ते हैं और चर्चा करते हैं कुछ विशेष का।

अक्सर कलाकारों का प्राचीन कला शैलियों से ठन जाता है फलतः कभी तो बहुत कुछ नया मिल जाता है पर कभी-कभी खो जाने का डर भी बना रहता है। नवशास्त्रीयतावादी, रोमांसवादी, यथार्थवादी एक दूसरे पर नुक्ताचीनी में व्यस्त थे उधर बार्बिजाँ गाँव जो फाँतेनब्लो वन के सीमा पर बसा हुआ था, में कुछ कलाकार प्रकृति के सान्निध्य में, जो शायद पहली दफा हो रहा था, चित्रकारी में रमे हुए थे। जिनके विषय हरे-भरे जंगल, खेत झोपड़ियाँ, गायें, बत्तख और खेती में मशगूल किसान थे। रूसो तथा दोबिन्यी बार्बिजाँ के प्रमुख कलाकारों में थे। इनकी कलाकृतियाँ यथार्थवादी थीं पर प्रकृति आदर्श रूप में न होकर नैसर्गिकता लिए हुए थी, प्रकृति की आंतरिक सुंदरता ही बार्बिजाँ कलाकृतियों की थाती है। जैसा कि आम है विरोध भी हुआ, गँवार तक का तमगा मिला, पर हुआ वही जो यहाँ के कलाकारों का समूह चाहता था। धीरे-धीरे इन सभी की कलाकृतियाँ चयनित भी होने लगीं और पुरस्कृत भी हुईं। प्रकृति को मुख्य विषय के रूप में वो भी सामने बैठ कर बिना किसी कृतिम प्रभाव के बनाना बार्बिजाँ कलाकारों की उपलब्धि है। शांति, सुकून नैसर्गिक सौंदर्य के तलाश में कुछ कलाकारों का बार्बिजाँ गाँव आना हुआ, कुछ कलाकार यहीं के हो गये तो कुछ समय-समय पर कृतियों के निर्मिती हेतु यहाँ आते रहे। बार्बिजाँ गाँव होने के कारण यहाँ आकर समूह में कार्य करने वाले उस समय के लगभग सभी कलाकारों को बार्बिजाँ कलाकार कहा गया। कुछ कलाकार प्रकृति को फलक पर इतने गहराई के साथ अंकित किये हैं कि चकित हुए बिना नहीं रहा जा सकता, कलाकार थियोदोर रूसो ऐसे ही कलाकारों में थे जो प्रकृति को महसूसते हुए अपनी तूलिका चलाते थे। निर्जीवता में भी सजीवता के दर्शन किया करते थे कलाकार रूसो। छाया-प्रकाश पर विशेष प्रकाश तो नहीं था पर प्रकृति पर इतना बारीक अध्ययन कि कृति बोल उठे कि अभी हवा चलेगी और पत्ते आ गिरेंगे हमारे हाथों पर। 15 अप्रैल 1812 में पेरिस में जन्में कलाकार रूसो का दाखिला बोर्डिंग स्कूल में हो तो गया था, पर वो कला के हो चुके थे, समय-समय पर चाचा का सानिध्य मिलता रहा। रूसो शांत प्रवृत्ति के व्यक्ति थे, भावुक भी थे। यात्रा और यात्रा में स्केच करना उन्हें बेहद पसंद था।

युवावस्था आते-आते अचानक से रूसो कला की दुनिया में एक लम्बी छलाँग लगाते हुए बहुत अच्छा करने लगे थे कुछ सालों तक इनके कृतियों का चयन

भी अकादमियों में होता रहा पर अच्छा समय ज्यादा दिनों तक साथ न दे सका और कई ऐसी घटनाएं जो मन को खरोंच जाती हैं, रूसो के साथ घटीं। कृतियों को लेकर कई मौकों पर हताशा, पारिवारिक उलझन, तमाम नकारात्मक घटनाओं का असर उनके सेहत पर भी दिखा जो अंत तक बना रहा। कमरे में कम जगह होने के कारण बड़े कैनवास पर कार्य करना थोड़ा मुश्किल था पर मित्रों के सहयोग से बड़े कार्य भी संभव हो सके। अकादमियों से कई दफा निराश होने के बावजूद शुभचिंतकों द्वारा कृतियों का प्रर्दशन किया गया, कला समीक्षकों द्वारा कृतियों पर गहराई से चिंतन हुआ, लोग इनके कृतियों से रूबरू हुए, कृतियाँ पसंद की गई, परिणामतः अकादमी में इनके कृतियों का चयन पुनः शुरू हुआ बाद में आप जूरी अध्यक्ष भी बने पर पूर्व में घटित घटनाओं ने आपको अंदर तक व्यथित कर रखा था जिससे उबर पाना मुश्किल था। उत्तरोत्तर खुशियों पर पूर्व का ग़म हावी रहा जो कभी-कभी कृतियों में नज़र भी आ जाता था।

'स्टडी ऑफ ट्री ट्रंक्स' कैनवास पर तैल, कृति में घासें जीवंत हो उठी हैं, तने पर का छिलका-छिलका बोलने को आतुर हो जैसे। तने जो कट कर भूमि पर पड़े हैं अपनी वेदना भी व्यक्त करते हुए से हैं जो कहीं न कहीं रूसो के ग़म को भी दर्शाते हैं। पीछे पड़ा तना दर्द से कराहता हुआ प्रतीत हो रहा है। बारीक से बारीक रेशे भी स्पष्ट नजर आ रहे हैं रंग एकदम से नैसर्गिक जान पड़े हैं, कल्पना का रंचमात्र भी प्रयोग नहीं है। कृति कलाकार के संवेदनशीलता को बखूबी बयाँ कर रही है। वहीं दूसरी कृति जहाँ आंधी-तूफान का अंकन है, भी जीवंत बन पड़ी है पर इस कृति में कृत्रिमता नहीं है ऐसा स्पष्ट नहीं कहा जा सकता।

जीवन के अंतिम समय में जबकि रूसो के कृतियों को लगातार महत्व मिलने लगा था, भावुक हृदयी रूसो पूर्व घटित घटनाओं में डूबे रहे फलतः शरीर पर प्रतिकूल असर हुआ और 22 दिसंबर 1867 को उनकी मृत्यु हो गई। कलाकृति साभार गूगल से है।

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

विश्व सामाजिक न्याय दिवस सबको समान न्याय की व्यवस्था

समाज में रहने वाले प्रत्येक मनुष्य को अर्थात् मानव को जन्म लेते ही कुछ वैधानिक अधिकार प्राप्त होते हैं और यदि ऐसे व्यक्तियों को अधिकार प्राप्त नहीं होते हैं, तो ऐसे सामाजिक व्यक्तियों को हमारे संविधान में मौलिक अधिकार प्रदान किये हैं। ये अधिकार किसी जाति विशेष के लिए नहीं है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को यह न्याय मिल सकें इसके लिए सामाजिक न्याय विभाग की व्यवस्था की गई है, जो यह देखता है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से न्याय प्राप्त हो। विश्व सामाजिक न्याय दिवस के संदर्भ में मैंने डिस्ट्रिक्ट जज, म.प्र. कमिश्नर गैस राहत, रेरा ज्यूडिशियल मेंबर, मानव अधिकार में सदस्य रहे वरिष्ठ न्यायाधीश दिनेश नायक से बात हुई। वे इन दिनों निःशुक्ल कानूनी सलाहकार दे रहे हैं।

सवाल- समाज के नागरिकों को यह व्यवस्था कब से प्राप्त हुई?

दिनेश नायकः यदि देखा जाए तो आदि-अनादि काल से एक कल्याणकारी राज्य के लिए कमजोर, गरीब, पिछड़े हुए व्यक्तियों के कल्याण व समृद्धि के लिए तात्कालीन शासकों द्वारा या शासन के द्वारा कई नीतियां लाभकारी योजनाएं बनाई गई थी। ब्रिटिश शासनकाल में उदार दृष्टिकोण नहीं रहा। मेग्नाकार्टा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकार की स्थापना का प्रथम दस्तावेज कहलाता है। यह दस्तावेज इग्लैंड के राजा द्वारा 1215 में जारी किया गया था। इस दस्तावेज के माध्यम से सामाजिक न्याय की बात की गई थी। किसी भी व्यक्ति को विधिपूर्ण न्याय निर्णयन अथवा देश की विधि से अन्यथा ना तो बंदी बनाया जाएगा और ना ही बेदखल किया जाएगा। विभिन्न विचारधाराओं के शासकों ने भारत में प्रवेश किया। कुछ शासक उदारवादी दृष्टिकोण के थे। उन्होंने भी सामाजिक न्याय की व्यवस्था की। जबकि कुछ आक्रांता शासकों द्वारा काफी अत्याचार हुआ।

सवाल- आखिर सामाजिक न्याय क्या है?

दिनेश नायक :

1. जीवन सुरक्षा तथा स्वतंत्रता
2. विचार तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता
3. विधि के समक्ष समानता का अधिकार
4. बलातश्रम एवं दासता से मुक्ति का अधिकार
5. स्वतंत्रता का अधिकार
6. जीवन तथा समुचित जीवन यापन का अधिकार
7. काम की न्यायोचित दशाएं
8. शिक्षा, सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का अधिकार

ममता तिवारी- क्या समाज में बच्चों, वरिष्ठ नागरिकों, निशक्त व्यक्तियों, कारागार में बंदियों तथा लैंगिक अपराधों में बालकों का संरक्षण तथा शिक्षा के अधिकारों में भी व्यवस्था की गई है?

दिनेश नायकः हां।

- किशोर न्याय (देख-रेख एवं सुरक्षा) बाल अधिनियम, 2020
- बाल श्रम (निषेध एवं नियमन) अधिनियम
- माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिकों का भरण-पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007
- निशक्त व्यक्तियों (समान अवसर संरक्षण एवं पूर्ण भागीदारी)
- जेल अधिनियम (बंदियों के अधिकार)
- लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण (पास्को) पास्को अधिनियम, 2012, शिक्षा का मूलभूत अधिकार अधिनियम, 2009

सवाल- क्या सामाजिक न्याय व्यवस्था में महिलाओं को न्याय दिलाने में क्या व्यवस्था की गई है?

दिनेश नायकः

1. महिला बाल विकासः छात्रावासों में बच्चों के साथ उपेक्षापूर्ण व्यवहार, इलाज की अव्यवस्था, उपचार में विलंब, बच्चों के साथ यौन उत्पीड़न।
2. आंगनबाड़ियां और इनमें बच्चों का विकासः आंगनबाड़ियों का संचालन महिला बाल विकास से होता है। ग्राम स्तर पर मां के तथा बच्चों के विकास के संदर्भ में आंगनबाड़ियां निर्मित की गई है।

गरीबी रेखा से नीचे वालेः 6 वर्ष की आयु के बच्चों, किशारों के साथ-साथ किशारों और गर्भवति स्त्रियों के लिए प्रसवपूर्ण देखभाल, पौष्टिक आहार, बीमारियों से बचाव, बच्चों की औपचारिक शिक्षा, टीकाकरण, संरक्षण कार्ड।

सवाल- ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक न्याय की व्यवस्था के लिए कौन से विभाग कार्यरत है और वैधानिक व्यवस्था क्या है?

दिनेश नायकः ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायतें, ग्राम न्यायालय, पुलिस चौकी, पुलिस व्यवस्था, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, विधिक

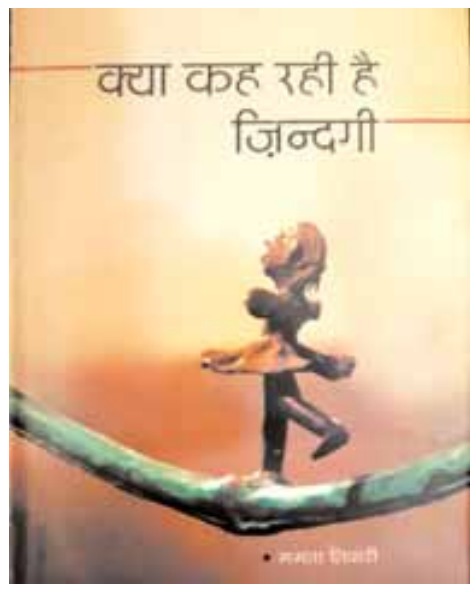

सहायता केन्द्र, राजस्व न्यायालय, शिक्षा व्यवस्था के लिए स्कूल, आदि व्यवस्था की गई है। संपूर्ण राज्य के लिए मौलिक अधिकार को सुरक्षित करने बाबत् मानव अधिकार की स्थापना की गई।

सवाल- सामाजिक न्याय के लिए आखिर सामाजिक न्याय विभाग में और क्या-क्या व्यवस्था है?

दिनेश नायकः

1. मूकबाधिर/दृष्टिबाधित को आई.टी.आई. व शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के लिए बहुत परेशानी होती है। उन्हें सांकेतिक भाषा व ब्रेल लिपी के शिक्षक उपलब्ध नहीं कराये जाते। छात्रावास बहुत गंदे। साफ-सफाई नहीं होती है। कम्प्यूटर उपलब्ध हैं परन्तु खोले ही नहीं गए क्योंकि कम्प्यूटर का ज्ञान देने वाले व जानने वाले इन स्कूलों में पदस्थ करने चाहिये। सभी-सभी तरह के यंत्र दिये नहीं गये। वृद्ध आश्रम, मूक बाधिर व अन्य निःशक्तजनों के स्कूल व छात्रावास में विभिन्न अधोसंरचना संबंधी कमियां।
2. शासकीय कर्मचारियों के द्वारा शिकायतें जैसे, स्थायीकरण समय पर न होना। परीवीक्षाधीन अवधि समय पर समाप्त न करना। पेंशन व अन्य लाभ समय पर न देना। कहीं-कहीं महिनों व वर्षों बाद देना। क्रमोन्नति, समयमान वेतनमान, भविष्य निधि इत्यादि का लाभ समय पर न मिलने के कारण पेंशन में नुकसान। पेंशनकर्ता के निःशक्त बच्चों को पेंशन निःशक्त व्यक्ति। पेंशनकर्ता के सेवानिवृत्त होने के पहले वेतन निर्धारण आदि न करवाने से कर्मचारी को बहुत अधिक नुकसान होना। किसी-किसी प्रकरण में तो 20-20 साल तक निराकरण न करना। समय पर पेंशन न देना।
3. नगर निगम जैसे, कॉलोनियों में साफ-सफाई न होना। नालियों की साफ-सफाई न होना। विभिन्न पेंशन समय पर न मिलना। अपात्र लोगों को पेंशन मिलना। जन्म, जाति, मृत्यु आदि प्रमाण पत्र समय पर न मिलना। अतिक्रमण- कॉलोनी के बाग में अतिक्रमण, सड़कों पर अतिक्रमण, अवैध निर्माण। पानी न मिलना, प्रदूषित पानी मिलना। स्ट्रीट लाईट न जलना। आवारा कुत्तों का आतंक। खतरनाक भवनों/क्षतिग्रस्त टंकियों से हादसे व व्यक्तियों की मृत्यु।
4. आवकारी विभाग जैसे, शराब की दुकानें आवासीय क्षेत्रों में खोलना जिस कारण से वहां के लोगों को बहुत परेशानी का सामना करना पड़ता है व निवासियों की आपत्तियों के बावजूद आवासीय क्षेत्रों में इन दुकानों का हटाया नहीं जा रहा है। शराब की दुकानों में शराब पिलाने से महिलाओं व बच्चों को परेशानी।
5. शिक्षा का अधिकारः-

1. अनिवार्य शिक्षा - 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों का नाम स्कूल में दर्ज कराना। सभी बच्चे आठवीं तक की शिक्षा पूर्ण कर सकें।
2. मौलिक अधिकार - समानता के अधिकार के साथ-साथ शिक्षा का अधिकार।
3. निःशुल्क शिक्षा
4. स्कूल सुविधा
5. स्क्रीनिंग पर रोक- कोई टेस्ट नहीं होगा।
6. केपिटेशन फीस पर रोक
7. कक्षा पर रोक से मनाही
8. शिकायतों का निराकरण
9. प्रायवेट शालाओं में 25 प्रतिशत निःशुल्क प्रवेश -
10. मध्यप्रदेश में निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009

6 से 14 वर्ष तक निःशुल्क

सवाल- क्या सामाजिक न्याय व्यवस्था के अंतर्गत बालकों, निशक्त व्यक्तियों व आम नागरिकों को पर्यावरण से संबंधित अधिकार प्राप्त हैं ?

दिनेश नायकः हां।

1. बालकों को यौन उत्पीड़न से सुरक्षा प्रदान की गई है। पास्को एक्ट (प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम सेक्सुअल क्राइम, 18 वर्ष तक के लिए)
2. चाइल्ड लाइन (1098)
3. विशेष पुलिस युनिट
4. बाल विवाह प्रतिच्छेद, अधिनियम, बाल विवाह रोकना आवश्यक है। निःशक्तजनों के लिए संचालित विभिन्न योजनाएं जैसे,
5. निःशक्तजन शिक्षा प्रोत्साहन सहायता योजना।

- निःशक्तजन विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा हेतु शिक्षण शुल्क निर्वाह भत्ता, परिवहन भत्ता योजना।
- निःशक्तजन अभ्यार्थियों को सिविल सेवा परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन योजना।
- निःशक्तजन विदेश अध्ययन हेतु छात्रवृत्ति योजना।
- निःशक्तजन छात्रगृह योजना।
- निःशक्तजन शिक्षा योजना।
- रूपये 400/- प्रतिवर्ष की दर से पुस्तकों एवं लेखन सामग्री पर हुआ वास्तविक खर्च।
- नेत्रहीन विद्यार्थियों को कक्षा 5 के बाद रूपये 50/- प्रतिमाह की दर से वाचक भत्ता।
- शरीर के निचले भाग में निःशक्तधारी छात्र-छात्राओं को रूपये 75/- प्रतिमाह की दर से मार्गरक्षण भत्ता।
- टेप रिकॉर्डर का प्रदाय।
- ब्रेल पुस्तक।
- लेखक सुविधा।

6. पर्यावरण के अधिकारः-

- शुद्ध वायु
- शुद्ध जल
- वृक्षों की सुरक्षा
- अतिक्रमण

वेबसीरिज समीक्षा

आदित्य दुबे
(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

कोहरा टू: चरित्रों की मीमांसा का दौर जारी

नेटफ्लिक्स की काफी पसन्द की गई वेब सीरीज 'कोहरा' अपने नये सीज़न के साथ - 'कोहरा टू' के नाम से लौटी है। यह वेब सीरीज हत्या और रहस्य की बाकी मर्डर मिस्ट्री से काफी अलग है, क्योंकि ये सिर्फ खून, हत्या और पड़ताल ही नहीं, बल्कि हर एक चरित्र की ज़िन्दगी पर भी बात करती है। सिरीज़ में हर चरित्र की अपनी एक कहानी और उसकी जटिल गुत्थी है, जिसे वो सुलझाने का प्रयास करती है। यही अन्दाज़े बयां इस सीज़न में भी बरकरार है। इस सिरीज़ की विशेषता भी यही है कि इसमें सिर्फ अपराध ही नहीं, हर चरित्र की जिन्दगी और रिश्तों पर पड़ी धुंध भी धीरे-धीरे छँटती है। ठेठ पंजाब की पृष्ठभूमि में रचे-बसे इस पुलिसिया इन्वेस्टिगेटिव क्राइम ड्रामा का पहला सीजन खूब पसन्द किया गया था। अब इसके दूसरे सीजन में उन्हीं मूल तत्वों के बीच अपराध की एक गुत्थी को बड़ी खूबी के साथ सुलझाया गया है।

इस सिरीज़ की कहानी पंजाब के दलेरपुरा इलाके की पृष्ठभूमि में बुनी गई है , जहाँ अमरपाल गरुंडी (बरुण सोबती) पहले सीजन की जगराना की अपनी पुरानी जिन्दगी भुलाकर यहाँ नई पोस्टिंग के साथ नई जिन्दगी शुरू कर चुका है। उसकी शादी हो चुकी है और वो अपनी पत्नी सिल्की के साथ एक खुशहाल जीवन बिता रहा है। पहले सीजन की तरह ही इस सीजन की शुरुआत भी एक हत्या से होती है। जहाँ एक प्रवासी लड़की प्रीत (पूजा भमराह) अपने घर के चारागाह में मृत अवस्था में मिलती है। सूचना मिलते ही एएसआई अमरपाल गरुंडी बाकी फोर्स के साथ वहाँ पहुंचते हैं। मामले की जांच का जिम्मा सौंपा जाता है एसआई धनवंत कौर (मोना सिंह) को। इसके बाद शुरू होती है प्रीत के हत्या की पड़ताल जिसमें परत दर परत नए-नए राज खुलते जाते हैं। जाँच के दौरान पता चलता है कि प्रीत अपने पति सैम (रणविजय सिंह) और दो बच्चों को छोड़कर कई महीनों से अपने मायके में ही रह रही थी। यहाँ उसका अपने डांस इंस्ट्रक्टर के साथ अफेयर भी चल रहा था। साथ ही उसका भाई बलजिंदर अटवाल (अनुराग अरोड़ा) के साथ प्रापर्टी का झगड़ा भी हुआ था। ऐसे में, शक की सुई इन तीनों पर जाती है,मगर इस जुर्म की जड़ें समाज की एक ऐसी बुराई की ओर धँसी मिलती हैं, जो निस्तब्ध क शर देता है।

सिरीज की केन्द्रीय भूमिका में मोना सिंह और बरुण सोबती हैं। दोनों ने अपने चरित्र को बखूबी निभाया है। ठेठ पंजाबी पृष्भूमि वाली इस सिरीज़ में मोना सिंह तो खूब जँची हैं। संवेदनशील और अपनी समस्याओं से जूझते दृश्यों में उनका दर्द दर्शक तक पहुँच पाता है । पहले सीजन से ही अपने अभिनय से प्रभावित करने वाले वरुण सोबती ने सबसे पुर असर रहे है। वो ठेठ पंजाबी पुलिस वाले लगते हैं। उनकी डायलॉग डिलिवरी, डार्क ह्यूमर, टाइमिंग इस बार भी जबर्दस्त है। सिरीज़ के बाकी कलाकारों अनुराग अरोड़ा, पूजा हमराह , रणविजय सिंह ,सभी ने अपने चरित्रों को कुशलता से निभाया है । सिरीज में इन्वेस्टिगेशन से इतर हर किरदार की अपनी कहानी भी देखने को मिलती हैं। जहां रिश्तों के बीच धुंध है, जो कहानी के आगे बढ़ने के साथ धीरे-धीरे छंटता जाता है। एसआई धनवंत कौर और एएसआई अमरपाल गरुंडी से लेकर सीरीज के एक छोटे से किरदार तक की एक बैकग्राउंड स्टोरी है, जिसके अपने इमोशन हैं। कुल मिलाकर कोहरा 2 सिर्फ एक मर्डर मिस्ट्री और इन्वेस्टिगेशन की कहानी नहीं है, बल्कि रिश्तों और सामाजिक बुराई पर कटाक्ष करती एक सिरीज है।

धर्म

डॉ. परविंदर शर्मा
लेखक परशुराम चेयर के पूर्व अध्यक्ष हैं।

भारतीय संस्कृति में महाशिवरात्रि का महत्व

भारत त्योहारों और आध्यात्मिक परंपराओं का देश है। यहाँ प्रत्येक पर्व का अपना धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व है। उन्हीं महत्वपूर्ण पर्वों में से एक है महाशिवरात्रि। यह पर्व भगवान शिव की आराधना का महान उत्सव है। फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाने वाला यह पर्व आध्यात्मिक जागरण, तप, भक्ति और आत्मशुद्धि का प्रतीक है। महाशिवरात्रि केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और जीवन-दर्शन का गहन प्रतीक है। महाशिवरात्रि का इतिहास अनेक प्राचीन ग्रंथों जैसे शिव पुराण, लिंग पुराण और स्कन्द पुराण में मिलता है। इन ग्रंथों के अनुसार इस दिन भगवान शिव का प्राकट्य हुआ था। मान्यता है कि सृष्टि के आरंभ में इसी दिन शिवजी ने 'लिंग' रूप में अवतार लिया था, जिसे 'ज्योतिर्लिंग' कहा गया। एक अन्य कथा के अनुसार इसी दिन भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हुआ था। इसीलिए इस दिन को शिव-विवाहोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। कई स्थानों पर शिव-बारात निकाली जाती है, जिसमें शिवजी को दूल्हे के रूप में सजाया जाता है और भक्तगण उल्लासपूर्वक भाग लेते हैं।

महाशिवरात्रि का संबंध समुद्र मंथन की कथा से भी जुड़ा है। जब देवताओं और असुरों ने अमृत प्राप्ति के लिए समुद्र मंथन किया, तब सबसे पहले हलाहल नामक विष निकला। इस विष की ज्वाला से सम्पूर्ण सृष्टि संकट में पड़ गई। तब भगवान शिव ने उस विष को अपने कंठ में धारण कर लिया, जिससे उनका कंठ नीला हो गया और वे 'नीलकंठ' कहलाए। यह घटना शिव के त्याग और करुणा का प्रतीक है। महाशिवरात्रि का दिन आत्मशुद्धि और आध्यात्मिक साधना के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। इस दिन भक्त उपवास रखते हैं और रातभर जागकर शिवजी का पूजन, जप और ध्यान करते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस दिन सच्चे मन से की गई आराधना से समस्त पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस दिन प्रातः स्नान करके शिवलिंग का अभिषेक किया जाता है। अभिषेक में जल, दूध, दही, घी, शहद और बेलपत्र चढ़ाए जाते हैं। बेलपत्र शिवजी को अत्यंत प्रिय है। 'ऊँ नमः शिवाय' मंत्र का जप किया जाता है। रात्रि के चार प्रहरों में पूजा का विशेष महत्व है।

भारतीय संस्कृति में भगवान शिव को संहारक ही नहीं, बल्कि पुनर्निर्माण और परिवर्तन के देवता माना गया है। वे योग, ध्यान, तपस्या और ज्ञान के प्रतीक हैं। महाशिवरात्रि का पर्व हमें आत्मसंयम, सादगी और आध्यात्मिक उन्नति की प्रेरणा देता है। भगवान शिव को 'आदियोगी' कहा जाता है, जिन्होंने मानवता को योग का ज्ञान दिया। महाशिवरात्रि की रात्रि को ध्यान और साधना के लिए अत्यंत प्रभावशाली माना गया है। इस दिन अनेक स्थानों पर सामूहिक ध्यान और भजन-कीर्तन आयोजित किए जाते हैं।

महाशिवरात्रि सामाजिक समरसता का प्रतीक पर्व है जाति, वर्ग और भेदभाव से ऊपर उठकर सभी को एक सूत्र में बांधता है। मंदिरों में सभी लोग मिलकर पूजा-अर्चना करते हैं। यह पर्व समाज में एकता और सद्भाव को बढ़ावा देता है। महाशिवरात्रि पूरे भारत में हर्षोल्लास से मनाई जाती है। विशेष रूप से निम्नलिखित मंदिरों में भव्य आयोजन होते हैं – काशी विश्वनाथ मंदिर- वाराणसी स्थित यह मंदिर शिवभक्तों के लिए अत्यंत पवित्र है। सोमनाथ मंदिर- यह बारह ज्योतिर्लिंगों में प्रथम माना जाता है। महाकालेश्वर मंदिर- यहाँ महाशिवरात्रि पर विशेष भस्म आरती होती है। केदारनाथ मंदिर- हिमालय की गोद में स्थित यह मंदिर श्रद्धालुओं के लिए विशेष महत्व रखता है। इन स्थानों पर लाखों भक्त एकत्र होकर भगवान शिव की आराधना करते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टि से भी महाशिवरात्रि का महत्व बताया जाता है। कहा जाता है कि इस दिन ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति मानव शरीर और चेतना पर विशेष प्रभाव डालती है। योग साधना के लिए यह रात्रि अत्यंत अनुकूल मानी जाती है। उपवास रखने से शरीर की शुद्धि होती है और मानसिक एकाग्रता बढ़ती है। भगवान शिव का स्वरूप अत्यंत सरल और गहन है। वे कैलाश पर्वत पर निवास करते हैं, शरीर पर भस्म धारण करते हैं, गले में सर्प और जटाओं में गंगा को धारण करते हैं। उनका यह स्वरूप प्रकृति के साथ एकात्मता और वैराग्य का प्रतीक है। शिव का तांडव नृत्य सृष्टि के निर्माण और विनाश का संकेत देता है। भारतीय दर्शन में शिव को 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' का प्रतीक माना गया है। वे अज्ञान के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। देश के विभिन्न राज्यों में महाशिवरात्रि अलग-अलग रीति-रिवाजों से मनाई जाती है। उत्तर भारत में कांवड़ यात्रा और शिव बारात का विशेष महत्व है। दक्षिण भारत में मंदिरों में विशेष अभिषेक और रथयात्राएँ निकाली जाती हैं। नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर में भी इस दिन विशाल मेला लगता है।

महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक संदेश हमें सिखाती है कि जीवन में संयम, त्याग और करुणा का कितना महत्व है। शिव का जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य और संतुलन बनाए रखना चाहिए। विष को पीकर भी उन्होंने संसार की रक्षा की यह त्याग और परोपकार की सर्वोच्च मिसाल है। यह पर्व हमें आत्मनिरीक्षण का अवसर देता है। उपवास और जागरण के माध्यम से हम अपने भीतर की नकारात्मकता को समाप्त कर सकारात्मक ऊर्जा को जागृत कर सकते हैं।

महाशिवरात्रि भारतीय संस्कृति का एक महान और पवित्र पर्व है। इसका इतिहास प्राचीन और गौरवशाली है। यह केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि आत्मविकास और सामाजिक एकता का संदेश भी देता है। भगवान शिव की आराधना हमें सादगी, तप, त्याग और प्रेम का मार्ग दिखाती है। आज के आधुनिक युग में भी महाशिवरात्रि का महत्व कम नहीं हुआ है। बल्कि तनाव और भागदौड़ भरे जीवन में यह पर्व हमें आध्यात्मिक शांति और संतुलन प्रदान करता है। अतः महाशिवरात्रि केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन की आत्मा है, जो हमें सत्य, शिव और सुंदर की ओर अग्रसर करती है।